वसीम बरेलवी

चराग़

चराग़

चराग़

वसीम बरेलवी

संकलन: सचिन चौधरी

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

MANJUL
मंजुल पब्लिशिंग हाउस
कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय
द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003
विक्रय एवं विपणन कार्यालय
7/32, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
वेबसाइट: www.manjulindia.com
वितरण केन्द्र
अहमदाबाद, बेंगलुरू, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई,
हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

चराग़

कॉपीराइट © 2018 वसीम बरेलवी
सर्वाधिकार सुरक्षित

यह संस्करण 2018 में पहली बार प्रकाशित

ISBN 978-93-87383-24-1

संकलन: सचिन चौधरी

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुन: प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीक़े से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है । यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

परिचय

प्रो. वसीम बरेलवी

वसीम बरेलवी का सम्बन्ध मुरादाबाद के जागीरदार घराने से है। उनके परदादा 384 गाँव के मालिक थे तथा मुरादाबाद से काशीपुर तक ट्रेन उन्हीं की ज़मीन पर चला करती थी। इसी परिवार के कारण उनके मोहल्ले का नाम नवाबपुरा पड़ गया था। उस मोहल्ले में वसीम बरेलवी का पैतृक घर आज भी बदली हुई सूरत में मौजूद है।

वसीम बरेलवी के पिता श्री शाहिद हुसैन "नसीम" अपनी कम आयु में ही एक वकील के चंगुल में फँस गये जिसने उन्हें कुछ का कुछ समझा कर सारी जायदाद अपने नाम लिखवा ली। जब उन्हें होश आया और बात बड़ों तक पहुँची तो यह मुकदमा हाई कोर्ट तक लड़ा गया लेकिन शाहिद हुसैन साहब उसी वकील का साथ देते रहे और अंततः सारी जायदाद उसी वकील को मिल गई। परिवार के बड़ों ने शाहिद हुसैन का विवाह बरेली के एक बड़े ज़मींदार शेख़ इंतेज़ामउल्लाह उर्फ़ मुन्ना मियाँ की पुत्री से कर दिया। इंतेज़ामउल्लाह साहब बहुत पहुँच और व्यापक सम्बन्धों वाले धर्मनिरपेक्ष प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी थे। शाहिद हुसैन साहब घर जमाई के रूप में उन्हीं के घर रहने लगे। बरेली शहर के मोहल्ला गढ़इया के इसी विशाल घर में 8 फ़रवरी 1940 को वसीम बरेलवी का जन्म हुआ और मुरादाबाद के होते हुए भी बरेलवी शब्द उनके नाम का अटूट अंग बन गया।

वसीम बरेलवी के पिता श्री शाहिद हुसैन के धर्मगुरू श्री सय्यद ग़ालिब मियाँ ने अपने शिष्य के इस पुत्र का नाम ज़ाहिद हसन रखा था। घर के लोगों ने प्यार से उन्हें परवेज़ का नाम दिया और बड़े होकर जब उन्होंने शायरी शुरू की तो अपने लिये "वसीम बरेलवी" नाम पसन्द किया और अब यही नाम उनकी पहचान है।

धन दौलत से अलग वसीम बरेलवी के ख़ानदान की साहित्यिक रूप में भी एक पहचान रही है। इस घराने में बड़े-बड़े महान विद्यावान और साहित्यकार होते रहे हैं। हज़रत मख़दूम समाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह, वसीम बरेलवी के मूल पुरुष थे। देहली के महरोली में निकलने वाला पंखे का जुलूस उन्हीं से सम्बन्धित है। उनकी एक दृष्टि से ही बड़े-बड़े पापी और दुराचारी सीधे रास्ते पर आ जाते थे। दैवज्ञान और चमत्कारों से सुसज्जित होने के कारण इस कुल के लोग शासन के उच्च पदों पर आसीन होते रहे हैं। मौलाना अबुल बरकात, मुफ़्ती मोहम्मद दौलत और मौलाना तुराब अली साहब जैसे श्रेष्ठ जानकार इस कुल में पैदा

हुए हैं जिनके साहित्यक और धार्मिक कारनामे आज भी इतिहास में सुरक्षित हैं। उर्दू की मशहूर क़िताब "आबे हयात" में लिखा है कि ख़्वाजा मीर दर्द (18वीं सदी के प्रसिद्ध शायर), "मसनवी मौलाना रूम" पढ़ने के लिये मुफ़्ती मोहम्मद दौलत साहब के पास आया करते थे। मौलाना तुराब अली साहब 53 पुस्तकों के रचयिता थे। यह सिलसिला प्रो. मोहम्मद हसन (देहली विश्वविद्यालय) जैसे विद्वान और विश्वस्त समीक्षक से लेकर वसीम बरेलवी तक फैला हुआ है। इस सारे विवरण से यह पता चलता है कि वसीम बरेलवी एक ऐसे कुल का हिस्सा हैं जो अत्यधिक आदरणीय और विद्या का प्रतीक रहा है।

वसीम बरेलवी ने सन् 1958 में आगरा विश्वविद्यालय से उर्दू में एम.ए. फ़र्स्ट डिवीज़न फ़र्स्ट पोज़ीशन में पास किया। एक माह बाद ही उनकी नियुक्ति सम्भल के हिन्द इण्टर कॉलेज में हो गई। सम्भल में रहते हुए ही उन्होंने मुशायरों में जाना शुरू कर दिया था। अक्टूबर 1959 में उनकी नियुक्ति देहली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज में हो गई। इस नौकरी के बीच ही उन्होंने लिंग्विस्टिक कोर्स में प्रवेश लेकर भाषाओं के बनने बिगड़ने इत्यादि का अध्ययन किया। इसने उन्हें यह हुनर अता किया कि वह विभिन्न भाषाओं की उत्पत्ति से लेकर आज तक के रूप पर घण्टों बोल सकते हैं।

दिल्ली की नौकरी से उन्हें एक साथ कई लाभ हुए। एक ओर उन्हें ख़्वाजा अहमद फ़ारूक़ी, ज़हीर अहमद सिद्दीक़ी, जावेद विशिष्ट और क़मर रईस जैसे विद्धानों के साथ उठने बैठने और काम करने का अवसर मिला तो दूसरी ओर आनन्द मोहन जुतशी, गुलज़ार देहलवी और अन्जुमन "तामीरे अदब" के द्वारा प्रसिद्ध रचनाकारों में आनन्द नारायण मुल्ला, बिस्मिल सईदी, अनवर साबरी, सय्यद हामिद, लभ्भूराम जोश मलस्यानी, गोपाल मित्तल, शमीम किरहानी, अर्श मलस्यानी, साहिर होशियारपुरी को सुनने, बल्कि ख़ुद उनके सम्मुख अपनी रचनायें सुनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अतः सम्भल के साथ-साथ देहली की नौकरी और रहना सहना भी वसीम बरेलवी की जीवन कथा का एक अटूट अंश है।

16 जुलाई 1962 को वसीम बरेलवी उर्दू प्रवक्ता के रूप में बरेली कॉलेज में नियुक्त हुए। 1979 में वह उर्दू विभागाध्यक्ष बना दिये गए। अब तक न केवल उनके नेतृत्व में बहुत से छात्र-छात्रा शोध ग्रन्थ प्रस्तुत करके पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं बल्कि स्वयं उनके जीवन और शायरी पर भी शोध कार्य हो चुका है। वसीम बरेलवी एम.जे.पी. विश्वविद्यालय के कला संकाय के डीन भी रहे और बेपनाह शोहरत और समाज में विशेष स्थान रखने के नाते बरेली जैसे विशाल और ऐतिहासिक नगर के 1992 में चीफ़ वॉर्डन सिविल डिफ़ैन्स के ओहदे से सरफ़राज़ किये गये। जून 2000 में डीन के पद से कार्यमुक्त होकर वह पूर्ण रूप से शायरी को समर्पित हो गए।

सन् 1966 में आपका पहला काव्य संकलन "तबस्सुम-ए-ग़म" प्रकाशित हुआ और बहुत लोकप्रिय रहा। फिर 1972 ई. में देवनागरी लिपि में "आँसू मेरे दामन तेरा" लिट्रेरी सोसायटी बरेली द्वारा इस शान से प्रकाशित हुआ कि इस अवसर पर एक बहुत बड़ा अखिल भारतीय मुशायरा आयोजित किया गया जिसमें फ़िराक गोरखपुरी, शमीम किरहानी, ख़ुमार बाराबंकवी, शाज़ तमकनत और डॉ. मलिकज़ादा मंज़ूर अहमद इत्यादि जैसे नामचीन शायर

सम्मिलित हुए थे। साथ ही मशहूर फ़िल्मी गायक महेन्द्र कपूर ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर वसीम बरेलवी की दो ग़ज़लें प्रस्तुत की थीं। तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री हेमवती नन्दन बहुगुणा जी ने अध्यक्षता की और मेजर जनरल कौल ने इस आयोजन का उद्घाटन किया। काव्य संग्रह के प्रकाशन का क्रम अभी तक थमा नहीं है और हिन्दी-उर्दू दोनों लिपियों में अब तक उनके तेरह संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

देश विदेश में उन्हें असंख्य अवॉर्ड और सम्मान मिल चुके हैं। फ़िराक़ इण्टरनेशनल अवॉर्ड और अली सरदार जाफ़री अवॉर्ड यू.एस.ए. शुरू होने के बाद सबसे पहले उन्हें ही प्रदान किये गए। एक ओर ह्यूस्टन सिटी कौंसिल टैक्सास, अमेरिका द्वारा उन्हें नागरिक सम्मान देते हुए ऑनरेरी सिटीज़नशिप और गुडविल एम्बेसेडर का सम्मान दिया गया तो दूसरी ओर भारत में क़ौमी कौन्सिल बराए फ़रोग़ उर्दू ज़बान (एन.सी.पी.यू.एल.) का वायस चैयरमेन नियुक्त किया गया जो उर्दू साहित्य जगत का सबसे प्रतिष्ठित एज़ाज़ है।

वसीम बरेलवी अब तक विश्व के हर उस देश में जा चुके हैं जहाँ-जहाँ मुशायरों का आयोजन किया जाता है और अदबी सेमीनार आयोजित किये जाते हैं। शायरी प्रस्तुत करने के लिये अब तक वह न जाने कितनी बार अमेरिका, कनाडा, दुबई, शारजाह, क़तर, मसकत, सऊदी अरब, बहरीन, पाकिस्तान, कीनिया इत्यादि देशों का दौरा कर चुके हैं। इन देशों में बड़े-बड़े मुशायरों के टिकट उनके नाम से ही बिक जाते हैं और उनकी उपस्थिति मुशायरे की कामयाबी की ज़मानत समझी जाती है।

वसीम बरेलवी के कलाम को देश की तीन गायक पीढ़ियों ने गाया है। पहली पीढ़ी के गायकों में महेन्द्र कपूर और लता मंगेशकर ने उनकी ग़ज़लें गाईं। दूसरी पीढ़ी के गायक जगजीत सिंह, पंकज उधास, चन्दन दास ने उनकी ग़ज़लों को अपनी आवाज़ दी, तो तीसरी पीढ़ी के युवा ग़ायक अमरीश मिश्रा ने उनकी ग़ज़लों को गाने का गौरव प्राप्त किया। मक्कीया बुक्स प्रा. लि. द्वारा अब तक उनकी तीन सी.डी. जारी की जा चुकी हैं।

एक ओर गोविन्दा और शाइनी आहूजा जैसे फ़िल्मी कलाकारों ने अपनी फ़िल्मों में वसीम बरेलवी के शेर पढ़े तो दूसरी ओर बहुत से राजनेताओं और उच्चस्थ पदों पर आसीन अधिकारियों, हाईकोर्ट के जजों और आम जनमानस ने अपनी बात को अधिक प्रभावी बनाने के लिये अकसर अपने सम्बोधन में वसीम बरेलवी के शेर पढ़े हैं।

जुलाई 2017 में जब पुलिस की वरिष्ठ अधिकारी श्रेष्ठता ठाकुर का सत्ताधारी पार्टी के कुछ लोगों से विवाद हो जाने के फलस्वरूप तबादला कर दिया गया और उनसे मीडिया ने पूछा कि आपको तबादले पर कैसा अनुभव हो रहा है तो उन्होंने अनायास ही वसीम बरेलवी का यह शेर पढ़ा:

जहाँ रहेगा वहीं रोशनी लुटाएगा
किसी चराग़ का अपना मकां नहीं होता

श्रेष्ठता ठाकुर का यह वीडियो वायरल हो गया और सोशल मीडिया पर उसने धूम मचा दी।

वसीम बरेलवी के वे शेर जो ज़रबुलमस्ल बन चुके हैं अर्थात ख़ास व आम की ज़बान पर हैं उन पर डॉ. जावेद नसीमी एक क़िताब तरतीब दे चुके हैं जिसका शीर्षक है "वसीम बरेलवी के ज़रबुलमस्ल अशआर"। यह पुस्तक उर्दू और देवनागरी दोनों लिपि में है और अब तक इसकी हज़ारों प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

उनके काव्य, व्यक्तित्व को समर्पित "लम्हे-लम्हे" जैसी साहित्यिक पत्रिका के तीन विशेषांक प्रकाशित किये गये हैं जिसमें फ़िराक़ गोरखपुरी, डॉ. मोहम्मद हसन, शमीम किरहानी, नशूर वाहिदी, डॉ. क़मर रईस, डॉ. अब्दुल मुग़नी, महशर बदायुनी, डॉ. तनवीर अलवी, रफ़त सरोश, इशरत ज़फर, डॉ. अली अहमद फ़ात्मी और कुँवर बैचेन जैसे हिन्दो-पाक के सुप्रसिद्ध क़लमकारों ने वसीम बरेलवी की शायराना अज़मतों को न केवल माना है बल्कि उनकी शायरी के नये आयामों और अन्दाज़-ए-फ़िक्र की तहदारियों को साहित्यिक ईमानदारी के साथ सराहा भी है।

हाल ही में जे.एन.यू. के प्रोफ़ेसर ख़्वाजा मोहम्मद इकराम और 'लम्हे-लम्हे' के सम्पादक हसीब सोज़ ने वसीम बरेलवी के फन और व्यक्तित्व पर "वसीम बरेलवी की शायरी-फ़िकरी और फ़न्नी जिहात" के शीर्षक से एक क़िताब तरतीब देकर प्रकाशित की है। इसके अतिरिक्त क़मर गोण्डवी ने उनके काव्य और व्यक्तित्व पर एक क़िताब हाल ही में लिखकर प्रकाशित की है जिसका विमोचन इसी महीने लखनऊ में एक साहित्यिक समारोह में हुआ है।

देश और समाज को जब-जब वसीम बरेलवी की ज़रूरत पड़ी है उन्होंने निःस्वार्थ भाव से अपनी सेवाएँ प्रस्तुत की हैं। कुछ वर्ष पूर्व जब बरेली में दंगा हुआ और कर्फ़्यु लग गया तो वह बरेली के बुद्धिजीवी समाज के साथ सड़कों पर निकले और अमन व शान्ति क़ायम करने के लिये अपनी सामाजिक भूमिका इस तरह निभाई कि आज तक उसे शहर याद करता है। उन दिनों उन्होंने अपने सारे बाहर के दौरे रदद् करके ख़ुद को समाज सेवा के लिये समर्पित कर दिया था और आख़िरकार वह बरेली में आपसी सौहार्द और भाईचारे को क़ायम रखने में सफल हुए।

2016 में उनके नाम के साथ एक मिसाली उपलब्धि यह भी जुड़ी कि उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं को मान्यता देते हुए अखिलेश यादव सरकार ने उन्हें छः वर्ष के लिये उ.प्र. विधान परिषद का सदस्य मनोनीत किया। बताया जाता है कि उ.प्र. विधान परिषद के इतिहास में कला और साहित्य के क्षेत्र से या तो हिन्दी की महान कवयित्री महादेवी वर्मा को मनोनीत किया गया था या फिर प्रदेश सरकार ने अप्रैल 2016 में वसीम बरेलवी को मनोनीत किया। उर्दू की वे पहली हस्ती हैं जिसे उ.प्र. सरकार ने इस एज़ाज़ से नवाज़ा है जो साहित्य जगत के साथ ही उर्दू दुनिया के लिये भी गर्व का विषय है।

30 अप्रैल 2016 को उन्होंने विधान परिषद की सदस्यता की शपथ ली और उसी दिन से समाज के कमज़ोर और लाचार वर्ग की सेवा में लग गये। पिछले वर्ष उन्होंने एम.एल.सी.

को मिलने वाले डेढ़ करोड़ रूपये में से 25-25 लाख रूपये चार ज़िलों के अस्पतालों को आईसीयू बनाने के लिये दिए और असाध्य रोगों जैसे कैंसर इत्यादि के मरीज़ों के इलाज के लिये बराबर आर्थिक सहायता दे रहे हैं।

वसीम बरेलवी के व्यक्तित्व और समाज सेवा से अलग यदि उनकी शायरी की बात करें तो वे शुरू से ही मुशायरों के कामयाब शायर थे।

रफ़त सरोश ने अलीगढ़ के एक मुशायरे का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि अलीगढ़ युनीवर्सिटी का वह मुशायरा भी याद है जब हम दोनों साथ अलीगढ़ गए थे। दौरे सानी उनके कलाम से शुरू हुआ था। उस वक्त युनीवर्सिटी के सख़ुन फ़हम तलबा का मजमा था और वसीम के सुरीले तरन्नुम और चुटीली ग़ज़ल ने सामेईन का दिल जीत लिया था। ग़ालिबन यही मुशायरा वसीम बरेलवी के "मुशायराना करियर" का रोशन नक्शे अव्वल है।

रफ़त सरोश ने जिस मुशायरे का ज़िक्र किया है वह वसीम बरेलवी के बिल्कुल शुरुआती ज़माने का मुशायरा था। उसमें वसीम बरेलवी को ऐसी सफलता मिली थी कि युनीवर्सिटी के छात्रों ने उनका ब्रीफ़केस छिपाकर ज़बरदस्ती उन्हें रुकने पर मजबूर कर दिया और तीन दिन तक युनीवर्सिटी के अलग-अलग हॉल में शेरी नशिस्त का आयोजन करके वसीम बरेलवी को सुना जाता रहा।

वसीम ने अपनी शायरी के लिये आसान और आम फ़हम ज़बान का इस्तेमाल किया है। आसान लफ़्ज़ों में अच्छा शेर कहना ज़्यादा मुश्किल समझा जाता है। रफ़त सरोश ने वसीम के कुछ शेरों को मीर, ग़ालिब और मोमिन के शेरों के साथ रखते हुए यह बताया है कि उपरोक्त उस्तादों की खूबियाँ वसीम बरेलवी के कलाम में भी मौजूद हैं। रफ़त सरोश लिखते हैं कि:

"वसीम तग़ज़्ज़ुल की अलामत को हाथ से नहीं जाने देते और ज़बान के मिज़ाजदाँ होने की हैसियत से ज़बान जैसी नाज़ुक चीज़ से खिलवाड़ नहीं करते। उनके बाज़ अशआर को इस अम्र की सनद के तौर पर पेश किया जा सकता है कि सहल-ए-मुमतना शेर वह है जिसकी नस्त्र न हो सके।

"मीर" उन नीमबाज़ आँखों में - सारी मस्ती शराब की सी है (मीर)
दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है - आख़िर इस दर्द की दवा क्या है (ग़ालिब)
तुम मेरे पास होते हो गोया - जब कोई दूसरा नहीं होता (मोमिन)
इक ज़रा सी अना के लिये उम्र भर - तुम भी तन्हा रहे मैं भी तन्हा रहा (वसीम)
जहाँ रहेगा वहीं रोशनी लुटाएगा - किसी चराग़ का अपना मकाँ नहीं होता (वसीम)
रात भर आँसुओं से जो लिखी गयी - सुबह को उस कहानी का सौदा हुआ

(वसीम)

रात भर झील की गोद में सोके भी - सुबह को चाँद क्यों प्यासा-प्यासा लगे
(वसीम)

वसीम बरेलवी अब तक मुशायरों के लिये एक सौ से ज़्यादा विदेशी यात्राएं कर चुके हैं। विदेश में बसे हुए लोग उनसे मिलकर ऐसे ख़ुश होते हैं जैसे वे अपने घर के किसी सदस्य से मिल रहे हों। अपनी मिट्टी के लिये यह प्रेम, अपनों से मिलने के लिये यह व्याकुलता और अपने घर से दूर परदेस में रहने का दुख, वसीम बरेलवी ने उन लोगों से मिलकर महसूस किया है और इसे अपनी शायरी का हिस्सा भी बनाया है। मिसाल के तौर पर यह शेर देखिये:

खुश्क मिट्टी ही ने जब पाँव जमाने न दिये
बहते दरया से फिर उम्मीद कोई क्या रखे

हमारे बारे में लिखना तो बस यही लिखना
कहाँ की शमाएं है किन महफ़िलों में जलती हैं

हम तो बेनाम इरादों के मुसाफिर हैं "वसीम"
कुछ पता हो तो बताएं कि किधर जाते हैं

वसीम बरेलवी पूरी तरह अपने युग, अपने माहौल और अपनी मिट्टी से जुड़े हुए शायर हैं। वह सिर्फ़ काल्पनिक दुनिया की बातें नहीं करते बल्कि अपने आस-पास से पूरी तरह बाख़बर रहते हैं और जदीद मौज़ूआत, अर्थात समकालीन समस्याओं और घटनाओं पर पूरी नज़र रखते हुए इन्हें अपनी शायरी का हिस्सा बनाते हैं। विश्वविख्यात नाक़िद प्रो. क़मर रईस ने लिखा है:

"वह (वसीम बरेलवी) ग़ज़ल की रिवायत से मुनहरिफ़ हुए बग़ैर अपने अहेद (युग) की सच्चाइयों की तर्जुमानी (प्रतिनिधित्व) कर रहे हैं। उनके रमूज़-ओ-अलाएम की अपनी दुनिया है। वह दूसरे जदीद शोरा की पैरवी से गुरेज़ करते हैं, मसलन परवाज़ और सफ़र के तलाज़मात उनके कलाम में बड़ी अहमियत रखते हैं और ये आज के नौजवानों की ज़िन्दगी, उनकी कशमकश और महरूमियों को पेश करते हैं।

मसलन:

मिली हवाओं में उड़ने की वह सज़ा यारों
कि मैं ज़मीन के रिश्तों से कट गया यारों

आज कल के रास्तों की बेयकीनी देखकर
कौन है जिसमें सफ़र का हौसला रह जायेगा

क्यों मेरा साथ छोड़े जाते हो
रास्ता रहनुमा नहीं होता

इस तरह मेरा ज़ौके सफ़र कोस रहा है
जैसे कि न मिलना मेरी मंज़िल की ख़ता है

सफ़र पे आज वही कश्तियाँ निकलती हैं
जिन्हें ख़बर है हवायें भी तेज़ चलती हैं

कहीं भी जाए मेरी हमसफ़र सी लगती है
वह राह जिसमें कोई नक़श-ए-पा नहीं होता

वसीम बरेलवी की शोहरत और सर्वप्रियता का ग्राफ़ लगातार बढ़ता ही जा रहा है। उन्हें चाहने वालों में हर वर्ग और हर धर्म के लोग मौजूद हैं। उन्हें चाहने और प्यार करने का यह सिलसिला उनकी शायराना ज़िंदगी की शुरुआत से ही चला आ रहा है। 1977 में वह जौनपुर के एक मुशायरे में गये थे। पंजाब मेल से बनारस पहुँच गये। वहाँ से बस के द्वारा जौनपुर जाना था। जब वह टिकट लेने के लिये बढ़े तो एक बुज़ुर्ग उनके पास आकर बोले कि अगर आप बुरा न मानें तो आपका टिकट मैं ले लूँ। वसीम के हाँ कहने पर उन्होंने टिकट ले लिया और दोनों एक साथ ही बस में बैठ गये लेकिन वह महाशय बिल्कुल खामोश ही बैठे रहे तो वसीम साहब ने पूछा आप मुझे कैसे जानते हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया कि सन् 1969 में आपने आज़मगढ़ में पहला मुशायरा पढ़ा था वहाँ मैंने पहली बार आपको सुना था। उसके बाद से मैं आपका हर मुशायरा सुनता हूँ। आपको सुनने के लिये ही आया हूँ, और यह कहकर उन्होंने अपने ब्रीफ़ केस से एक पोस्टकार्ड निकाल कर दिखाया और कहा कि जब मेरे साले ने मुझे ख़बर दी कि जौनपुर के मुशायरे के पोस्टर में वसीम बरेलवी का नाम भी शामिल है तो मैंने उसे ख़त लिखा कि मुशायरे के कनवेनर से मिलकर पूछो कि क्या वाक़ई वसीम बरेलवी आ रहे हैं? तो यह पोस्टकार्ड मेरे साले ने भेजा था। उन्होंने पोस्टकार्ड वसीम साहब के आगे बढ़ा दिया उसमें उन साहब के साले ने लिखा था “मैंने मालूम कर लिया है। वसीम बरेलवी का कन्फ़र्मेशन आ चुका है, वह मुशायरे में आ रहे हैं।” इस पोस्टकार्ड के मिलने के बाद ही मैं मुशायरा सुनने आया हूँ। वसीम साहब ने उनसे पूछा कि जब आप इतने दिनों से मेरी शायरी को पसन्द करते हैं तो आज तक मुलाक़ात क्यों नहीं की? उनका उत्तर था कि “मैंने सोचा इतनी अच्छी सूरत, इतनी अच्छी आवाज़, इतनी अच्छी दिल में उतर जाने वाली शायरी लेकिन कहीं यह आदमी अच्छा नहीं निकला तो इसके बारे में जो ख़याल बना

हुआ है वह ख़त्म हो जायेगा मैं इस ख़्वाब को तोड़ना नहीं चाहता था।" वसीम साहब ने पूछा तो फिर अब आपने कैसे समझ लिया कि मैं आदमी अच्छा हूँ। तो वह बोले मैं अलीगढ़ से लॉ ग्रेजुएट हूँ, आज़मगढ़ में वकालत करता हूँ और स्टेशन पर आपकी गुफ़्तुगू के बाद अच्छी तरह समझ लिया था कि आप आदमी भी अच्छे हैं और देखिये अब आपके साथ सफ़र कर रहा हूँ।

उपरोक्त घटना तो वसीम साहब की नौजवानी और शायरी के शुरुआती दौर की है। अब एक घटना सन् 2013 की भी सुन लीजिये जब वसीम साहब 73 वर्ष के थे और अमेरीका के मुशायरे में ग़ज़ल पढ़ने के बाद मंच से नीचे आये तो बहुत से लोगों ने उन्हें घेर लिया और ऑटोग्राफ़ वग़ैरह लेने लगे। उसी भीड़ में से एक बहुत ही सुन्दर सी महिला हिजाब पहने हुए वसीम साहब के पास आयीं। उनके हाथ में वसीम साहब के तीन काव्य संकलन और दो सी.डी. मौजूद थीं जो उन्होंने वहीं लगे हुए स्टॉल से ख़रीदी थीं। उन्होंने ऑटोग्राफ़ के लिये काव्य संकलन को आगे बढ़ाते हुए कहा "वसीम साहब! मुझे दस साल लग गये आप तक पहुँचते पहुँचते।" वसीम साहब ने आटोग्राफ़ के बाद क़िताब उन्हें वापस की तो उस भारी भीड़ के बीच ही उन्होंने अनायास ही वसीम साहब के दोनों गालों, माथे और ठोड़ी पर चुम्बन कर लिये और फ़ौरन ही पलटकर गेट की ओर चल दीं। न उस महिला ने उस वक़्त और कोई बात की और न ही उसके बाद आज तक उनसे कोई राबता किया। इस आचरण से साफ़ है कि उसने ख़ुद को नुमायां करने या वसीम साहब से तअल्लुक़ बढ़ाने के लिये ऐसा नहीं किया था बल्कि दिल के अन्दर वसीम बरेलवी के लिये मुहब्बत और अक़ीदत का ऐसा वालिहाना जज़्बा था जिसे वह रोक न सकी और उन्हें सामने पाकर चुंबन लेने पर मजबूर हो गयी। ऐसी पाकीज़ा अक़ीदत की मिसालें कम ही देखने में आती हैं और लोगों के दिलों में जगह बनाने का यह सौभाग्य सभी को प्राप्त नहीं होता।

वसीम बरेलवी ने अपनी शायरी पर मज़मून लिखवाने के लिये न कभी नाक़ेदीन (आलोचकों) के घर का तवाफ़ किया और न पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों की खुशामद की। सम्पादकों के मांगने पर भी वह अपना कलाम कम ही भेजते हैं। यही वजह है कि पत्र-पत्रिकाओं में उनका कलाम नज़र नहीं आता। पत्रिका वाले अकसर उनका कलाम दूसरों के नाम से छाप देते हैं। कहने का मतलब यह है कि उन्होंने छपने छपाने पर कोई ध्यान नहीं दिया और सीधा-सीधा श्रोता से संवाद करना ही बेहतर जाना। जैसा कि प्रो. अली अहमद फ़ात्मी ने लिखा है कि:

"फ़िरदौसी, कालीदास, कबीर, नज़ीर, मीर, ग़ालिब, जोश, फ़ैज़ बगैरह सबके सब अवामी शायर हैं और अवाम ने ही उन्हें ज़िन्दा भी रक्खा है। इसी क़बील के शायर हैं वसीम बरेलवी, जिन्होंने कभी ख़वास (विशिष्ट वर्ग) की परवाह नहीं की। नक़्क़ादों (आलोचकों) को ख़ातिर में नहीं लाए कि उन्हें अपने अवामी मुशाहेदात, तख़लीक़ी तजर्बात और मुख़लिसाना वाबस्तगी पर इस क़दर एतेमाद व यक़ीन है।"

सुप्रसिद्ध आलोचक प्रोफ़ेसर मो. हसन ने वसीम बरेलवी की शायरी पर राय देते हुए लिखा है कि:

“वसीम की शायरी असर-ए-हाज़िर (वर्तमान काल) के ज़ख़्मों की गवाही है। ऐसी आवाज़ें जो दिलदोज़ बाज़गश्त छोड़ जाती हैं उनके अन्दरून में वह रूह को पिघलाने वाले हादसात और एहसासात हैं जिनमें दुख और दर्दमन्दी के समुन्दर अंगड़ाइयाँ लेते हैं।”

वसीम बरेलवी जब पहली बार पाकिस्तान गये तो वहाँ उनकी मक़बूलियत का यह हाल था कि बड़े-बड़े अख़बारों के पूरे-पूरे कॉलम उन पर लिखे गये। वहाँ के बहुत बड़े अखबार दैनिक जंग, कराची एक्सप्रेस और जंग मिड वीक इत्यादि ने उनसे इन्टरव्यू लेकर उन्हें नुमायाँ करके प्रकाशित किया और अपने अख़बारों के पूरे-पूरे पेज वसीम बरेलवी के लिय वक़्फ़ कर दिये।

रोज़नामा एक्सप्रेस, कराची (पाकिस्तान) की प्रतिनिधि हुमैरा अतहर ने अपने अख़बार में लिखा कि वसीम बरेलवी हिन्दुस्तान ही नहीं पाकिस्तान में भी बहुत मक़बूल है। उनकी मौजूदगी मुशायरे की कामयाबी की ज़मानत समझी जाती है।

पाकिस्तान में हुमैरा अतहर को दिया गया वसीम बरेलवी का इन्टरव्यू यादगार और तारीख़ी इन्टरव्यू है जिसमें उन्होंने कहा कि आपके यहाँ की (पाकिस्तान की) क़िताबें हिन्दुस्तान में देवनागरी में छपती हैं, इन्हें पढ़कर अहमद नदीम क़ासमी, मुनीर नियाज़ी और परवीन शाकिर वग़ैरह हिन्दी जानने वालों में भी मक़बूल हुए इसके विपरीत यहाँ मुझे एहसास होता है कि हिन्दुस्तान के बड़े शायर “निराला”, “जयशंकर प्रसाद” और “नीरज” वगैरह के बारे में आम लोगों को तो क्या ख़ास लोगों को भी कोई मालूमात नहीं है। यह चीज़ मुझे सोचने पर मजबूर करती है कि वहाँ के अदब (साहित्य) और आम शेरी हलक़ों में सारी खिड़कियाँ और दरवाज़े खोल के रक्खे गये हैं तो यहाँ ऐसा क्यों नहीं है? जबकि बड़े अदब (उच्च साहित्य) के फ़रोग़ के लिये यहाँ भी इसका होना ज़रूरी है। हम टी.एस. ईलीयट, शेक्सपीयर और बायरन वग़ैरह को पढ़ते हैं तो कबीर, रहीम वग़ैरह को क्यों न पढ़ा जाये। मैं समझता हूँ कि पाकिस्तान में भी उर्दू के साथ देवनागरी लिपि सीख ली जाए। हिन्दी स्क्रिप्ट जानने के बाद आप इसके हक़ीक़ी (वास्तविक) सोर्स तक पहुंच सकते हैं।” शायद वसीम बरेलवी के प्रयासों से ही पाकिस्तान में हिन्दी के कवियों अशोक चक्रधर और डॉ. कुवँर बेचैन इत्यादि को बुलाया गया और वहाँ उनकी शायरी को सराहना मिली। अभी हिन्दी के कुछ और कवियों को भी वहाँ जाना था लेकिन हालात खराब होने के कारण यह क्रम रुक गया।

हिन्दी कविता और हिन्दी के शायरों के प्रति वसीम बरेलवी की इस उदारता, फिराख़दिली और हिन्दी काव्य से प्रेम का ही नतीजा है कि वे उर्दू के साथ-साथ हिन्दी वालों में भी उतने ही लोकप्रिय हैं। इस लोकप्रियता का उदाहरण उस समय सामने आया जब 27 नवम्बर 2016 को लखनऊ में वसीम बरेलवी का जश्न मनाया गया तो इस अवसर पर उन्हें आशीर्वाद देने के लिये श्री मुरारी बापू विशेष चार्टर्ड विमान से लखनऊ पधारे और कार्यक्रम में सम्मिलित होकर इसे ऐतिहासिक बना दिया।

वसीम बरेलवी की शायरी पर उर्दू और हिन्दी के बड़े-बड़े विद्वान और आलोचक अपनी राय दे चुके हैं जो पत्रिका ‘लम्हे-लम्हे’ के विशेष नम्बरों में मौजूद है। उनमें से कुछ के अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।

“वसीम के कलाम में आगही और शऊर की तहों का जायज़ा है... वसीम की शायरी एहसासे हयात की हयात अफ़ज़ा शायरी है।”

— फ़िराक़ गोरखपुरी

“उर्दू शायरी में ग़म के मज़ामीन बहुत मिलते हैं मगर इस क़दर हसीन ग़म, शीरीं ग़म जैसा कि वसीम की ग़ज़लों में मिलता है शायद ही कहीं और मिल सके। ग़ज़लों की ज़बान बड़ी सलीस, दिलकश और शीरीं है।”

— नशूर वाहिदी

“शायरी में वसीम बरेलवी की आवाज़ एक नई आवाज़ है। अपने मआसरीन (समकालीन) से अलग उनकी शायरी निखरी हुई और सुथरी शायरी है।”

— प्रो. जगन्नाथ आज़ाद

“वसीम बरेलवी ने इस दौर में ग़ज़ल की रिवायत को पूरी ज़िम्मेदारी से निभाया है और लुत्फ़ यह है कि उनकी ग़ज़लें कहीं भी रिवायती नहीं होने पातीं।”

— डॉ. सहर अंसारी (पाकिस्तान)

“वसीम के लहजे में नफ़ासत और बला का तहज़ीबी रचाव है, यह सजावट से पाक दो टूक अन्दाज़ में बात करते हैं। समाजीयात और समाजी क़दरों और तअल्लुक़ के फैलाव को निहायत तवाज़ुन और गहरी मानवीयत के साथ लाते हैं।”

— प्रो. यूनुस शरर (अमरीका)

“वसीम बरेलवी का कमाल यह है कि वह ग़ज़ल के लबो लहजे में ही तमाम मौज़ूआत व मसाएल को बखूबी समेटते हैं और कहीं बड़े लतीफ़ इशारे में बड़ी बात कह जाते हैं।” मसलन:

आसुओं पर इस तरह हंसते हैं लोग
जैसे ग़म का कोई मुस्तक़बिल नहीं

— प्रो. ख़्वाजा मो. इकरामुद्दीन

वसीम बरेलवी के बुज़ुर्ग और नामचीन शायरों तथा आलोचकों और उनके समकालीन शायरों, कवियों, आलोचकों तथा बुद्धिजीवियों की राय देखने के बाद इस वास्तविकता को मानना पड़ेगा कि वसीम बरेलवी एक अहेदसाज़ शख़्सीयत का नाम

है जिसका यह दावा बिल्कुल सही है कि:

हमारे शेरों में इक दौर सांस लेता है
वसीम कैसे ज़माना हमें भुलाएगा

— डॉ. जावेद नसीमी
रामपुर

अवार्ड तथा सम्मान

• मीर तक़ी मीर एकेडमी, लखनऊ का इम्तियाज़े मीर अवॉर्ड@@ मीर तक़ी मीर एकेडमी, लखनऊ का इम्तियाज़े मीर अवॉर्डमीर तक़ी मीर एकेडमी, लखनऊ का इम्तियाज़े मीर अवॉर्ड
• हिन्दी उर्दू संगम, लखनऊ का ग़ज़ल अवॉर्ड
• कला स्मृति, लुधियाना का ग़ज़ल अवॉर्ड
• कुल हिन्द हिन्दी उर्दू साहित्य अवॉर्ड लखनऊ
• अन्जुमन-ए-अमरोहा, कराची (पाकिस्तान) का खुसूसी ग़ज़ल अवॉर्ड
• इलियत कॉलेज कराची (पाकिस्तान) का ग़ज़ल अवॉर्ड
• दा उस्मानियन्स, शिकागो (अमरीका) का नसीम-ए-उर्दू अदब अवॉर्ड
• हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा साहित्य सारस्वत सम्मान
• काउन्सलेट जनरल ऑफ़ इण्डिया, जद्दा (स.अ.) द्वारा सम्मान 1997-2005
• गहवारा-ए-अदब, अमरीका द्वारा साहित्य सम्मान 2005
• ह्यूस्टन सिटी काउन्सल, टैक्सास (अमरीका) द्वारा नागरिक सम्मान ऑनरेरी सिटीज़नशिप और गुडविल एम्बैसेडर 2007
• गहवारा-ए-अदब, एटलान्टा अमरीका द्वारा अदबी सम्मान 2007
• ऐवान-ए-उर्दू, ऑरलैंडा अमरीका द्वारा साहित्य सम्मान 2007
• मुत्तहदा क़ौमी मूवमेन्ट, न्यूयार्क अमरीका द्वारा अदबी एज़ाज़ 2007
• दूरदर्शन की 48वीं वर्षगांठ पर साहित्यिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र से सम्मानित 2007
• फ़िराक़ इन्टरनैशनल अवॉर्ड 2008
• “जंग” ग्रुप ऑफ़ न्यूज़ पेपर्स, पाकिस्तान द्वारा सिपासनामा 2008
• अलीगढ़ अलुमनाए असोसिएशन, टैक्सास (अमरीका) द्वारा अली सरदार जाफ़री लिट्रेरी अवॉर्ड 2009
• पाकिस्तानी अमेरीकन असोसिएशन, कनेक्टिकट (अमरीका) द्वारा अदबी एज़ाज़ 2009
• सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति द्वारा डॉ. राम गोपाल चतुर्वेदी सम्मान 2009
• जनवाणी साहित्यिक अवॉर्ड 2011
• उर्दू सोसायटी, अमरीका द्वारा रहनुमाए उर्दू अवॉर्ड 2012

- हल्का-ए-एहबाबे ज़ौक़, अमरीका द्वारा अदबी एज़ाज़ 2012
- मौलाना मोहम्मद अली जौहर अदबी अवॉर्ड, देहली 2013
- उ.प्र. सरकार द्वारा “यश भारती” सम्मान 2013
- कैफ़ी आज़मी अदबी अवॉर्ड 2013
- इण्डिया उर्दू सोसायटी, दोहा (क़तर) द्वारा लाइफ़ टाइम एचिवमेंट अवॉर्ड फ़ार पोएट्री 2013
- हिन्दी उर्दू साहित्य अवॉर्ड 2014
- इत्तिहाद-ए-मिल्लत कन्वेन्शन “निशाने मीर” अवॉर्ड 2014
- उ.प्र. उर्दू अकादमी द्वारा कौमी एकता सुग़रा मेंहदी अवॉर्ड
- अमर उजाला ग्रुप द्वारा कानपुर में “अतुल महेश्वरी वाणी” सम्मान 2015
- कलाधर्मी बाग बेगम अख़्तर एकेडमी ऑफ़ ग़ज़ल द्वारा “कलाधर्मी बाग” अवॉर्ड 2015
- सन्त कालिदास साहित्य समिति, कुरूक्षेत्र द्वारा स्वर्ण पदक सम्मान 2015

सदस्य

- सदस्य, सेन्ट्रल एडवाइज़री बोर्ड ऑफ़ एजूकेशन ऑफ़ इण्डिया
- आकाशवाणी और दूरदर्शन (भारत सरकार) की सलाहकार समिति के सदस्य रहे
- आकाशवाणी रामपुर की प्रोग्राम सलाहकार समिति के सदस्य रहे
- उर्दू अकादमी लखनऊ के सदस्य रहे
- सिविल डिफ़ेन्स, बरेली के चीफ़ वॉर्डन रहे

अध्यक्ष

जन सतर्कता समिति, बरेली
बरेली नागरिक समाज, बरेली

संरक्षक

- मानव सेवा क्लब, बरेली
- बरेली अमन कमेटी, बरेली
- पूर्व वाईस चेयरमैन, एन.सी.पी.यू.एल. संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार)
- सदस्य, उ.प्र. विधान परिषद 2016

विषय-सूची

नई ग़ज़लें

चुनिंदा ग़ज़लें

चुनिंदा अशआर

चुनिंदा नज़्में

गीत

नई ग़ज़लें

1

हज़ारों काँटो से दामन छुड़ा लिया मैंने
अना को मार के सब कुछ बचा लिया मैंने

कहीं भी जाऊँ नज़र में हूँ इक ज़माने की
ये कैसा ख़ुद को तमाशा बना लिया मैंने

अज़ीम थे ये दुआओं को उठने वाले हाथ
न जाने कब इन्हें कासा बना लिया मैंने

अंधेरे बीच में आ जाते इससे पहले ही
दिया तुम्हारे दिये से जला लिया मैंने

मुझे जुनून था हीरा तराशने का तो फिर
कोई भी राह का पत्थर उठा लिया मैंने

जले तो हाथ मगर हाँ हवा के हमलों से
किसी चराग़ की लौ को बचा लिया मैंने

2

इससे बढ़कर ख्वाब जीने की सज़ा कुछ भी नहीं
ज़िन्दगी भर ठोकरे खाईं मिला कुछ भी नहीं

तुम तो यादों के हवाले करके मुझको चल दिये
मेरी मजबूरी यह है मैं भूलता कुछ भी नहीं

प्यार की अपनी ज़बाँ अपना ही इक अन्दाज़ है
मैंने सब कुछ सुन लिया उसने कहा कुछ भी नहीं

तयशुदा इल्ज़ाम की जिससे कोई तस्दीक़ हो
मेरे घर से आज तक ऐसा मिला कुछ भी नहीं

खो दिया क़तरे ने ख़ुद को इक तअल्लुक के लिए
और मज़ा यह है समन्दर को पता कुछ भी नहीं

आखिरश आँधी ने जो चाहा वही होकर रहा
कोशिशें तो की चरागों से हुआ कुछ भी नहीं

3

हवा अंधेरों के ऐसे दबावों में आई
फिर इक ग़रीब से घर का दिया उठा लाई

घरों की बात घरों से जहाँ निकल आई
तो फिर किसी के न रोके रुकेगी रुस्वाई

ख्याल यह था कि अब दिन ज़रूर निकलेगा
मगर यह रात तो फिर रात ले के लौट आई

ये जायदाद की तक़सीम भाइयों में हुई
कि जायदादों में तक़सीम हो गये भाई

नहीं तो ख़ुद किसी मन्ज़र का एक हिस्सा थी
तुम्हारी सम्त जब उठी तो आँख कहलाई

बुझा दिये गये कैसे बिना वज़ाहत के
दियों की गर्म मिज़ाजी हवा के काम आई

मेरी निगाह में मंज़िल के ख्वाब रहते हैं
मुझे सताती नहीं रास्तों की तन्हाई

अजीब बात है हर रिश्ता टूटने के बाद
मुझे तो अपनी ही कोई कमी नज़र आई

मैं कम निगाह था ऐसा कि पढ़ नहीं पाया

किसी दरीचे से छनती रही शानासाई

4

दुनिया की हर जंग वहीं लड़ जाता है
जिसको अपने आप से लड़ना आता है

परदा जब गिरने के क़रीब आ जाता है
तब जाकर कुछ खेल समझ में आता है

तू क्या समझा तुझसे बिछुड़ कर बिखरूँगा
देख! ये मैं हूँ मुझको सम्भलना आता है

प्यार तो इक जज़्बा है तलब से आगे का
प्यार में कोई कैसे धोखा खाता है

जिस घर में बस एक कमाने वाला हो
मर जाए जो घर का घर मर जाता है

दुनिया से लड़ने को निकले हो तो वसीम
देखो दुशमन देख के उलझा जाता है

5

सभी को छोड़कर ख़ुद पर भरोसा कर लिया मैंने
वो मैं जो मुझमें मरने को था ज़िन्दा कर लिया मैंने

मुझे उस पार उतर जाने की जल्दी ही कुछ ऐसी थी
कि जो कश्ती मिली उस पर भरोसा कर लिया मैंने

मुझे ये खौफ़ दे मालिक मुझी पर है नज़र तेरी
बस इतना ही नहीं काफ़ी कि सजदा कर लिय मैंने

भरोसा तूने तोड़ा था मगर ख़ुद को सज़ा यूँ दी
कि फिर जो मिल गया उस पर भरोसा कर लिया मैंने

यही चाहा कि जो मुझसे मिले मेरी तरह सोचे
इसी इक सोच से ख़ुद को अकेला कर लिया मैंने

सफ़र मेरा किसी तूफान के डर से नहीं रुकता
इरादा कर लिया तो फिर इरादा कर लिया मैंने

6

दरिया का सारा नशा उतरता चला गया
मुझको डुबोया और मैं उभरता चला गया

वो पैरवी तो झूठ की करता चला गया
लेकिन बस उसका चेहरा उतरता चला गया

हर साँस उम्र भर किसी मरहम से कम न थी
मैं जैसे कोई ज़ख्म था भरता चला गया

हद से बढ़ी उड़ान की ख़्वाहिश तो यूँ लगा
जैसे कोई परों को कतरता चला गया

मंज़िल समझ के बैठ गये जिनको चन्द लोग
मैं ऐसे रास्तों से गुज़रता चला गया

दुनिया समझ में आई मगर आई देर से
कच्चा बहुत था रंग उतरता चला गया

7

यही तै जानकर कूदो उसूलों की लड़ाई में
कि रातें कुछ न बोलेंगी चराग़ों की सफाई में

बुरी सोचों के कारोबार में इतनी कमी तो है
कमाई होती है बरकत नहीं होती कमाई में

निभाना खून के रिश्ते कोई आसां नहीं होता
गुज़र जाती है सारी ज़िन्दगी ख़ुद से लड़ाई में

तअल्लुक के वह मौसम तो भुलाए ही नहीं जाते
वफ़ा के रुख़ निकलते थे जब उसकी बेवफाई में

किसी को भी किसी फ़न में मकान ऐसे नहीं मिलता
कि सांसें फूल जाती हैं पहाड़ों की चढ़ाई में

8

बिछड़ जाऊँ तो फिर रिश्ता तेरी यादों से जोड़ूँगा
मुझे ज़िद है मैं जीने का कोई मौक़ा न छोड़ूँगा

मोहब्बत में तलब कैसी वफ़ादारी में शर्तें क्या
वो मेरा हो न हो मैं तो उसी का हो के छोड़ूँगा

तअल्लुक टूट जाने पर जो मुश्किल में तुझे डाले
मैं अपनी आँख में ऐसा कोई आँसू न छोड़ूँगा

तेरे रस्ते मेरी यह एहतियातें याद रखेंगे
चलूँगा इस सलीके से कि नक्श-ए-पा न छोड़ूँगा

कहीं जज़्बात के पैरों से तहज़ीबें भी चलती है
किसी के प्यार की खातिर मैं अपना घर न छोड़ूँगा

9

चला है सिलसिला कैसा ये रातों को मनाने का
तुम्हें हक़ दे दिया किसने दियों के दिल दुखाने का

इरादा छोड़िए अपनी हदों से दूर जाने का
ज़माना है ज़माने की निगाहों में न आने का

कहाँ की दोस्ती किन दोस्तों की बात करते हो
मियाँ दुश्मन नहीं मिलता कोई अब तो ठिकाने का

निगाहों में कोई भी दूसरा चेहरा नहीं आया
भरोसा ही कुछ ऐसा था तुम्हारे लौट आने का

ये मैं ही था बचा के ख़ुद को ले आया किनारे तक
समन्दर ने बहुत मौक़ा दिया था डूब जाने का

10

ज़माना मुश्किलों में आ रहा है
हमें आसान समझा जा रहा है

जिधर जाने से दिल कतरा रहा है
उसी जानिब को रस्ता जा रहा है

किसी का साथ पाने की ललक में
कोई हाथों से निकला जा रहा है

मिला दी ख़ाक में जिसनें बहारें
उसे फूलों में तोला जा रहा है

जिसे महसूस करना चाहिए था
उसे आँखों से देखा जा रहा है

तुझे क़तरा भुनाने की पड़ी है
तेरे हाथों से दरिया जा रहा है

11

जाने कैसी प्यास पैमाने में है
सारी-सारी रात मैखाने में है

इसकी मैं भी उसके पैमाने में है
यह शिकायत आम मैखाने में है

तू जो है बस मुझको ठुकराने में है
मेरा सब कुछ तेरा कहलाने में है

तेरी दुनियादारियों से इक सवाल
मेरा रिश्ता कौन से खाने में है

सच तो बस इक बार जी कर मुतमईन
झूठ ज़िन्दा ख़ुद को दोहराने में है

यह न ताबीरों के समझेगी अज़ाब
आँख तो बस ख्वाब दिखलाने में है

वो भला दुनिया को पाने में कहाँ
जो मज़ा दुनिया को ठुकराने में है

12

ये एहतियाज़-ए-मोहब्बत तो जी नहीं जाती
कि तेरी बात मुझी से कही नहीं जाती

तेरी निगाह भी कैसी अजब कहानी है
मेरे अलावा किसी से पढ़ी नहीं जाती

ये हौसला भी कोई इख़्तियार देता है
किसी को ऐसे तो आवाज़ दी नहीं जाती

तुझे पता भी है सूरज तेरे इलाक़े में
कहीं-कहीं तो कभी रोशनी नहीं जाती

जिसे भी मिलना है ख़ुद आए ये न जाएंगे
फ़क़ीरज़ादों की शाहंशही नहीं जाती

घरों पे आके भी ज़िक्र-ए-सफ़र तो रहता है
सफ़र की बात सफ़र में ही की नहीं जाती

अजब मिज़ाज है इन खानदारी लोगों का
तबाह हो के भी दरियादिली नहीं जाती

भटकते फिरते हैं कब से इक ऐसे सहरा में
जहाँ पे चीख भी अपनी सुनी नहीं जाती

ज़बां बिगड़ने का अंदेशा भी तो रहता है

सफ़र में सबसे मियां बात की नहीं जाती

13

हो गया जैसा यहाँ, ऐसा कहाँ हो जायेगा
क़तरे बोलेंगे, समन्दर बेज़बां हो जायेगा

प्यार की यह फ़ितरी कमज़ोरी छुपा के देखे तो
जिस्म बोलेगा तेरा चेहरा ज़बां हो जायेगा

क़दशनासी का यहाँ जब कोई पैमाना नहीं
जो भी उठेगा वह मीर-ए-कारवाँ हो जायेगा

तेरी नज़रों की हदें तुझको बताने के लिए
और कुछ दिन में तेरा बेटा जवाँ हो जायेगा

प्यार जब तेरे लिए कोई जुनूँ था ही नहीं
तू भला बदनाम दुनिया में कहाँ हो जायेगा

मैं न कहता था कि मुझमें इतनी दिलचस्पी न ले
वह जो अपना ही नहीं तेरा कहाँ हो जाएगा

उम्र हो दरकार जिस चेहरे को पढ़ने के लिए
चन्द लफ़्ज़ों में भला कैसे बयाँ हो जाएगा

खौफ़ के साये में बच्चे को अगर जीना पड़ा
बेज़बां हो जायेगा या बदज़बां हो जाएगा

क्या अजब शर्ते अमलदारी का मौसम है वसीम

जो भी लूटे बाग़ को वह बागबाँ हो जाएगा

14

दिन की ज़रूर होगी मगर रात की कहाँ
सूरज! चराग़ जैसी तेरी रोशनी कहाँ

होंठों को रोज़ इक नये दरिया की आरज़ू
ले जाएगी ये प्यास की आवारगी कहाँ

कतरे को देख खो दिया ख़ुद को तेरे लिए
दरिया तुझे नसीब ये दरियादिली कहाँ

जो आँधियों के ज़ोर से नज़रें मिला सके
इस दौर के दियों में वह दीवानगी कहाँ

ख़ुदगर्ज़ियों में बंट गई जज़्बों की वुसअतें
ग़म को भी जो निभाए अब ऐसी खुशी कहाँ

दुनिया से कुछ उम्मीद जो रखते तो किस लिए
दुनिया से सारी उम्र हमारी निभी कहाँ

मैं दिन की रोशनी में हुआ गुम तो ऐ वसीम
दुनिया चराग़ ले के मुझे ढूंढती कहाँ

15

ग़म को दुनियादार बनाना पड़ता है
आँसू को भी आँख तक आना पड़ता है

जाने किस रस्ते को सोच के निकले थे
जाने किस रस्ते पर जाना पड़ता है

नई ज़मीनें रस्ता रोज़ नहीं देतीं
कभी-कभी ख़ुद को दोहराना पड़ता है

तुमसे रस्मो राह बढ़ाने की खातिर
किस-किस की बातों में आना पड़ता है

अखबारों की सुर्ख़ी बनना खेल नहीं
चौराहों पर शोर मचाना पड़ता है

चुनिंदा ग़ज़लें

1

आते-आते मेरा नाम-सा रह गया
उसके होठों पे कुछ कांपता रह गया

रात मुजरिम[1] थी, दामन बचा ले गयी
दिन गवाहों की सफ़[2] में खड़ा रह गया

वह मेरे सामने ही गया और मैं
रास्ते की तरह देखता रह गया

झूठ वाले कहीं-से-कहीं बढ़ गये
और मैं था कि सच बोलता रह गया

आँधियों के इरादे तो अच्छे न थे
यह दिया कैसे जलता हुआ रह गया

उसको कांधों पे ले जा रहे हैं 'वसीम'
और वह जीने का हक़ मांगता रह गया

---

1. अपराधी
2. पंक्ति

2

दूर से ही बस दरिया[1] दरिया लगता है
डूब के देखो कितना प्यासा लगता है

तन्हा[2] हो तो घबराया सा लगता है
भीड़ में उसको देख के अच्छा लगता है

आज ये है कल और यहाँ होगा कोई
सोचो तो सब खेल तमाशा लगता है

मैं ही न मानूँ, मेरे बिखरने में वरना
दुनिया भर को हाथ तुम्हारा लगता है

ज़ेहन से काग़ज़ पर तस्वीर उतरते ही
एक मुसव्विर[3] कितना अकेला लगता है

प्यार के इस नश्शे को कोई क्या समझे
ठोकर में जब सारा ज़माना लगता है

भीड़ में रह कर अपना भी कब रह पाता
चाँद अकेला है तो सब का लगता है

शाख़[4] पे बैठी भोली-भाली इक चिड़िया
क्या जाने उस पर ही निशाना लगता है

1. नदी
2. अकेला
3. चित्रकार
4. डाल

3

मैं इस उम्मीद पे डूबा कि तू बचा लेगा
अब इसके बाद मेरा इम्तिहान[1] क्या लेगा

ये एक मेला है, वादा किसी से क्या लेगा
ढलेगा दिन, तो हर इक अपना रास्ता लेगा

मैं बुझ गया, तो हमेशा को बुझ ही जाऊंगा
कोई चराग़ नहीं हूं कि फिर जला लेगा

कलेजा चाहिए दुश्मन से दुश्मनी के लिए
जो बेअमल[2] है, वह बदला किसी से क्या लेगा

मैं उसका हो नहीं सकता, बता न देना उसे
लकीरें हाथ की अपनी वह सब जला लेगा

हज़ार तोड़ के आ जाऊं उससे रिश्ता 'वसीम'
मैं जानता हूं वह जब चाहेगा, बुला लेगा

---

1. परीक्षा
2. निकम्मा

4

ये है तो सबके लिए हो ये ज़िद हमारी है
इस एक बात पे दुनिया से जंग[1] जारी है

उड़ान वालों! उड़ानों पे वक़्त भारी है
परों[2] की अब के नहीं हौसलों की बारी है

मैं क़तरा हो के भी तूफ़ाँ से जंग लेता हूँ
मुझे बचाना समन्दर की ज़िम्मेदारी है

इसी से जलते हैं सहरा-ए-आरज़ू[3] में चराग़
ये तिश्नगी[4] तो मुझे ज़िन्दगी से प्यारी है

कोई बताये ये उसके ग़ुरूरे बेजा[5] को
वो जंग मैंने लड़ी ही नहीं जो हारी है

हर एक साँस पे पहरा है बे-यक़ीनी का
ये ज़िन्दगी तो नहीं मौत की सवारी है

दुआ करो कि सलामत रहे मिरी हिम्मत
ये इक चराग़ कई आँधियों पे भारी है

---

1. लड़ाई

2. पंखों
3. इच्छा के रेगिस्तान
4. प्यास
5. अनुचित गर्व

5

अजीब है कि मुझे रास्ता नहीं देता
मैं उस को राह से जब तक हटा नहीं देता

मुझे भी चाहिए कुछ वक़्त ख़ुद से मिलने को
मैं हर किसी को तो अपना पता नहीं देता

ये अपनी मर्ज़ी से अपनी जगह बनाते हैं
समन्दरों को कोई रास्ता नहीं देता

ज़रूर है किसी गर्दन पे रोशनी का ख़ून
कोई चराग़ तो ख़ुद को बुझा नहीं देता

मिरी निगाह की गुस्ताख़ियाँ[1] समझता है
वह जाने क्यों मुझे फिर भी सज़ा नहीं देता

ये छोट-छोटे दिये साज़िशों में रहते हैं
किसी का घर कोई सूरज जला नहीं देता

---

1. बदतमीज़ी

6

ज़रा-सा क़तरा कहीं आज अगर उभरता है
समन्दरों ही के लहज़े में बात करता है

खुली छतों के दिये कब के बुझ गये होते
कोई तो है, जो हवाओं के पर कतरता है

शराफ़तों की यहां कोई अहमियत[1] ही नहीं
किसी का कुछ न बिगाड़ो, तो कौन डरता है

यह देखना है कि सहरा[2] भी है, समन्दर भी
वह मेरी तश्नालबी[3] किसके नाम करता है

तुम आ गये हो, तो कुछ चांदनी-सी बातें हों
ज़मीं पे चांद कहां रोज़-रोज़ उतरता है

ज़मीं की कैसी वक़ालत हो, फिर नहीं चलती
जब आसमां से कोई फ़ैसला उतरता है

---

1. महत्ता
2. मरुस्थल
3. प्यास

7

खुल के मिलने का सलीक़ा आपको आता नहीं
और मेरे पास कोई चारे दरवाज़ा नहीं

वो समझता था, उसे पाकर ही मैं रह जाऊंगा
उसको मेरी प्यास की शिद्दत[1] का अन्दाज़ा नहीं

जा, दिखा दुनिया को, मुझको क्या दिखाता है ग़ुरूर
तू समन्दर है, तो हो, मैं तो मगर प्यासा नहीं

कोई भी दस्तक करे, आहट हो या आवाज़ दे
मेरे हाथों में मेरा घर तो है, दरवाज़ा नहीं

अपनों को अपना कहा, चाहे किसी दर्जे के हों
और जब ऐसा किया मैंने, तो शरमाया नहीं

उसकी महफ़िल में उन्हीं की रोशनी, जिनके चराग़
मैं भी कुछ होता, तो मेरा भी दिया होता नहीं

तुझ से क्या बिछड़ा, मेरी सारी हक़ीक़त[2] खुल गयी
अब कोई मौसम मिले, तो मुझ से शरमाता नहीं

---

1. तीव्रता

2. वास्तविकता

8

तुम्हें ग़मों का समझना अगर न आयेगा
तो मेरी आँख में आँसू नज़र न आयेगा

ये ज़िन्दगी का मुसाफ़िर, ये बेवफ़ा लम्हा
चला गया, तो कभी लौटकर न आयेगा

बनेगें ऊँचे मकानों में बैठकर नक़्शे
तो अपने हिस्से में मिट्टी का घर न आयेगा

मना रहे हैं बहुत दिन से जश्न-ए-तश्नालबी[1]
हमें पता था, ये बादल इधर न आयेगा

लगेगी आग, तो सिम्त-ए-सफ़र[2] न देखेगी
मकान शहर में कोई नज़र न आयेगा

'वसीम' अपने अंधेरों का ख़ुद इलाज करो
कोई चराग़ जलाने इधर न आयेगा।

---

1. प्यास का समारोह
2. यात्रा की दशा

9

मुहब्बत नासमझ होती है, समझाना ज़रूरी है
जो दिल में है, उसे आँखों से कहलाना ज़रूरी है

उसूलों पर जहां आंच आये, टकराना ज़रूरी है
जो ज़िन्दा हो, तो फिर ज़िन्दा नज़र आना ज़रूरी है

नई उम्रों की ख़ुदमुख़्तारियों[1] को कौन समझाये
कहां से बच के चलना है, कहां जाना ज़रूरी है

थके-हारे परिन्दे जब बसेरे के लिए लौटें
सलीक़ामन्द[2] शाख़ों का लचक जाना ज़रूरी है

बहुत बेबाक आँखों में तअल्लुक़[3] टिक नहीं पाता
मुहब्बत में कशिश[4] रखने को शरमाना ज़रूरी है

सलीक़ा ही नहीं, शायद उसे महसूस करने का
जो कहता है ख़ुदा है, तो नज़र आना ज़रूरी है

मेरे होठों पे अपनी प्यास रख दो और फिर सोचो
कि इसके बाद भी दुनिया में कुछ पाना ज़रूरी है

---

1. स्वाधिकार

2. व्यवहारकुशल
3. सम्बन्ध
4. आकर्षण

10

सभी का धूप से बचने को सर नहीं होता
हर आदमी के मुक़द्दर में घर नहीं होता

कभी लहू से भी तारीख़ लिखनी पड़ती है
हर एक मारिका[1] बातों से सर नहीं होता

मैं उसकी आँख का आँसू न बन सका, वर्ना
मुझे भी ख़ाक में मिलने का डर नहीं होता

मुझे तलाश करोगे, तो फिर न पाओगे
मैं इक सदा हूं, सदाओं का घर नहीं होता

हमारी आँख के आँसू की अपनी दुनिया है
किसी फ़क़ीर को शाहों का डर नहीं होता

क़लम उठाये मेरे हाथ थक गये, फिर भी
तुम्हारे घर की तरह मेरा घर नहीं होता

मैं उस मकान में रहता हूं और ज़िन्दा हूं 'वसीम'
जिसमें हवा का गुज़र नहीं होता

1. संघर्ष

11

मैं आसमां पे बहुत देर रह नहीं सकता
मगर यह बात ज़मीं से तो कह नहीं सकता

किसी के चेहरे को कब तक निगाह में रक्खूं
सफ़र में एक ही मंज़र तो रह नहीं सकता

यह आज़माने की फ़ुर्सत तुझे कभी मिल जाये
मैं आँखों-आँखों में क्या बात कह नहीं सकता

सहारा लेना ही पड़ता है मुझको दरिया का
मैं एक क़तरा हूं तनहा तो बह नहीं सकता

लगा के देख ले, जो भी हिसाब आता हो
मुझे घटा के वह गिनती में रह नहीं सकता

यह चन्द लम्हों[1] की बेइख़्तियारियां[2] हैं 'वसीम'
गुनह से रिश्ता बहुत देर रह नहीं सकता

---

1. क्षणों
2. काबू न होना

12

तुम्हारी राह में मिट्टी के घर नहीं आते
इसीलिये तो तुम्हें हम नज़र नहीं आते

मुहब्बतों के दिनों की यही ख़राबी है
यह रूठ जायें, तो फिर लौटकर नहीं आते

जिन्हें सलीक़ा[1] है तहज़ीब-ए-ग़म[2] समझने का
उन्हीं के रोने में आँसू नज़र नहीं आते

ख़ुशी की आँख में आँसू की भी जगह रखना
बुरे ज़माने कभी पूछकर नहीं आते

बिसाते-इश्क़[3] पे बढ़ना किसे नहीं आता
यह और बात कि बचने के घर नहीं आते

'वसीम' ख़बर बनाते हैं, तो वही अख़बार
जो ले के एक भी अच्छी ख़बर नहीं आते

---

1. ढंग
2. दुःख की संस्कृति
3. प्रेम की बाज़ी

13

अपने साए को इतना समझाने दे
मुझ तक मेरे हिस्से की धूप आने दे

एक नज़र में कई ज़माने देखे, तो
बूढ़ी आँखों की तस्वीर बनाने दे

बाबा, दुनिया जीत के मैं दिखला दूंगा
अपनी नज़र से दूर तो मुझको जाने दे

मैं भी तो इस बाग़ का एक परिन्दा हूं
मेरी ही आवाज़ में मुझको गाने दे

फिर तो यह ऊंचा ही होता जायेगा
बचपन के हाथों में चांद आ जाने दे

फ़सलें पक जायें, तो खेत से बिछड़ेंगी
रोती आँख को प्यार कहां, समझाने दे

14

जीते हैं, किरदार[1] नहीं है
नाव तो है, पतवार नहीं है

मेरा ग़म मझधार नहीं है
ग़म है, कोई उस पार नहीं है

खोना-पाना मैं क्या जानूं
प्यार है, कारोबार नहीं है

सजदा[2] वहां इक सर की वर्ज़िश[3]
सर पे जहां तलवार नहीं है

मैं भी कुछ ऐसा दूर नहीं हूं
तू भी समन्दर-पार नहीं है

पहले तोलो, फिर कुछ बोलो
लफ़्ज़ कोई बेकार नहीं है

मैं सबसे झुककर मिलता हूं
मेरी कहीं भी हार नहीं है

---

1. पात्रता

2. माथा टेकना
3. व्यायाम

15

क्या दुख है, समन्दर को बता भी नहीं सकता
आँसू की तरह आँख तक आ भी नहीं सकता

तू छोड़ रहा है, तो ख़ता इसमें तेरी क्या
हर शख़्स मेरा साथ निभा भी नहीं सकता

प्यासे रहे जाते हैं ज़माने के सवालात
किसके लिए ज़िन्दा हूं, बता भी नहीं सकता

घर ढूंढ़ रहे हैं मेरा रातों के पुजारी
मैं हूं कि चराग़ों को बुझा भी नहीं सकता

वैसे तो इक आँसू ही बहाकर मुझे ले जाये
ऐसे कोई तूफ़ान हिला भी नहीं सकता

16

रात के हाथ से दिन निकलने लगे
जायदादों[1] के मालिक बदलने लगे

एक अफ़वाह सब रौनकें ले गयी
देखते-देखते शहर जलने लगे

मैं तो खोया रहूंगा तेरे प्यार में
तू ही कह देना, जब तू बदलने लगे

सोचने से कोई राह मिलती नहीं
चल दिये हैं, तो रस्ते निकलने लगे

छीन ली शोहरतों[2] ने सब आज़ादियां
राह चलतों से रिश्ते निकलने लगे

---

1. सम्पत्ति
2. प्रसिद्धि

17

क़तरा[1] हूं, अपनी हद से गुज़रता नहीं
मैं समन्दर को बदनाम करता नहीं

तू अगर एक हद से गुज़रता नहीं
मैं भी अपनी हदें पार करता नहीं

अपनी कम-हिम्मती को दुआ दीजिये
पर किसी के कोई यूं कतरता नहीं

जाने क्या हो गयी इसकी मासूमियत[2]
अब ये बच्चा धमाकों से डरता नहीं

बस, जमीं से जुड़ी हैं सभी रौनकें
आसमां से कोई घर उतरता नहीं

---

1. बूंद
2. भोलापन

18

शाम तक सुब्ह की नज़रों से उतर जाते हैं
इतने समझौतों पे जीते हैं कि मर जाते हैं

फिर वही तल्ख़ि-ए-हालात[1] मुक़द्दर ठहरी
नश्शे कैसे भी हों, कुछ दिन में उतर जाते हैं

इक जुदाई का वह लम्हा कि जो मरता ही नहीं
लोग कहते थे कि सब वक़्त गुज़र जाते हैं

घर की गिरती हुई दीवारें ही मुझसे अच्छी
रास्ता चलते हुए लोग ठहर जाते हैं

हम तो बेनाम इरादों के मुसाफ़िर हैं 'वसीम'
कुछ पता हो, तो बतायें कि किधर जाते हैं

1. परिस्थितियों की कड़वाहट

19

मैं अपने ख़्वाब से बिछड़ा नज़र नहीं आता
तो इस सदी[1] में अकेला नज़र नहीं आता

अजब दबाव है इन बाहरी हवाओं का
घरों का बोझ भी उठता नज़र नहीं आता

मैं तेरी राह से हटने को हट गया, लेकिन
मुझे तो कोई भी रास्ता नज़र नहीं आता

मैं इक सदा पे हमेशा को घर तो छोड़ आया
मगर पुकारने वाला नज़र नहीं आता

धुआं भरा है यहां तो सभी की आँखों में
किसी को घर मेरा जलता नज़र नहीं आता

ग़ज़लसराई[2] का दावा तो सब करे हैं 'वसीम'
मगर वह 'मीर'-सा लहज़ा[3] नज़र नहीं आता

---

1. शताब्दी
2. ग़ज़ल सुनाना
3. शैली

20

जब अपनी सांस ही दरपरदा[1] हम पे वार करे
तो फिर जहां में कोई किस पे एतबार[2] करे

वफ़ा की राह में कितने ही मोड़ आयेंगे
बता! ये उम्र कहां तेरा इन्तिज़ार करे

हर एक अपने लिए मेरे ज़ख़्म गिनता है
मेरे लिए भी कोई हो, जो मुझसे प्यार करे

बहुत दिनों मैं ज़माने की ठोकरों में रहा
कहो ज़माने से, अब मेरा इन्तिज़ार करे

सब अपनी प्यास में गुम हैं, यहां तो ऐ साक़ी[3]
कोई नहीं, जो तेरे मैकदे[4] से प्यार करे

---

1. परदे की ओट से छिपकर
2. विश्वास
3. शराब बांटने वाला
4. मदिरालय

21

सांस का मतलब जान नहीं है
जीना कोई आसान नहीं है

प्यार की बाज़ी हार गये, तो
हार के भी नुक़सान नहीं है

ज़हनों में वह जंग है जारी
जिसका कोई ऐलान नहीं है

गांव के मेले-पनघट देखो
शहर में हिन्दुस्तान नहीं है

आज की दुनिया उसको जाने
जिसकी कोई पहचान नहीं है

22

आँखों आँखों रहे और कोई घर न हो
ख़्वाब जैसा किसी का मुक़द्दर न हो

क्या तमन्ना है रोशन तो सब हों मगर
कोई मेरे चराग़ों से बढ़ कर न हो

रोशनी है तो किस काम की रोशनी
आँख के पास जब कोई मंज़र न हो

क्या अजब आरज़ू घर के बूढ़ों की है
शाम हो तो कोई घर से बाहर न हो

जिसको कमतर समझते रहे हो वसीम
मिल के देखो कहीं तुमसे बेहतर न हो

23

उसकी आँखों से क्या नींद चुराना है
ख़ुद को भी तो सारी उम्र जगाना है

तुझ तक जिस रस्ते से हो कर जाना है
उस पर तो पहले से एक ज़माना है

किससे बचना किससे हाथ मिलाना है
सबके पास अपना-अपना पैमाना[1] है

आग हवा पानी से जो भी रिश्ता हो
मिट्टी के हैं मिट्टी में मिल जाना है

कोई न समझे काश मिरी मजबूरी को
घर का ग़म ले कर महफ़िल[2] में जाना है

फल तो ख़ैर कहाँ उसके खा पाऊँगा
फिर भी पूरे शौक़ से पेड़ लगाना है

अन्दर से जब सारे रिश्ते बिखरे हों
घर आँगन की बात तो बाहर जाना है

पाने को मरने वालों की दुनिया में
खोने वालों का भी एक घराना है

ओस का नन्हा सा क़तरा[1] समझायेगा

सूरज की नज़रों में कैसे आना है

---

1. मापदण्ड
2. सभा, गोष्ठी
1. बूंद

24

हम ये तो नहीं कहते कि हम तुझसे बड़े हैं
लेकिन ये बहुत है कि तिरे साथ खड़े हैं

वो आज को सर करके[1] दिखाने पर अड़े हैं
हम हैं कि अभी कल ही के पैरों पे खड़े हैं

ये बात तो उस बाग़ के हक़[2] में नहीं जाती
कुछ फूल भी काँटों की हिमायत[3] में खड़े हैं

रुसवाई[4] के इक डर को भी वह जीत न पाया
हम जिसके लिए सारे ज़माने से लड़े हैं

देते हैं वही फ़ैसले तूफ़ानों के रुख़ पर
जो एक ज़माने से किनारों पे खड़े हैं

हूँ ख़ाक[5] मगर मेरी मुहब्बत की बदौलत[6]
ये चाँद सितारे तिरे क़दमों में पड़े हैं

ये गूँगों की महफ़िल है निकलना ही पड़ेगा
क्या इतनी ख़ता[7] कम है कि हम बोल पड़े हैं

दुनिया से वसीम आयी निभाने की जहाँ बात
हम ख़ुद से अकेले में बहुत देर लड़े हैं

1. जीत कर
2. हित, पक्ष
3. सर्मथन
4. बदनामी
5. मिट्टी
6. कारण
7. अपराध

25

मिले कुछ तो ख़ुशी होगी न कुछ जाये तो ग़म होगा
तअल्लुक़[1] जितना इस दुनिया के हंगामों से कम होगा

कहाँ तक आंख रोयेगी कहाँ तक किसका ग़म होगा
मिरे जैसा यहाँ कोई न कोई रोज़ कम होगा

तुझे पाने की कोशिश[2] में कुछ इतना खो चुका हूँ मैं
कि तू मिल भी अगर जाये तो अब मिलने का ग़म होगा

समन्दर की ग़लतफ़हमी[3] से कोई पूछ तो लेता
ज़मीं का हौसला[4] क्या ऐसे तूफ़ानों से कम होगा

तिरी चाहत मुझे आख़िर समझने क्यों नहीं देती
किसी क़तरे से मिलने को समन्दर कितना कम होगा

न हो इक प्यार का रिश्ता जो पहचानें बनाता है
तो पूछेगा कोई मुझ को न तू इतना अहम[5] होगा

मुहब्बत नापने का कोई पैमाना नहीं होता
कहीं तू बढ़ भी सकता है कहीं तू मुझसे कम होगा

---

1. सम्बन्ध

2. प्रयास
3. समझ की भूल
4. उत्साह
5. महत्त्वपूर्ण

26

क्या ठीक मुझे लगता है और क्या नहीं लगता
कह देता अगर जान का खतरा नहीं लगता

इस तरह तो मिलना कोई मिलना नहीं लगता
तन्हाई[1] में भी मैं उसे तन्हा नहीं लगता

इक तेरे न होने से कुछ अच्छा नहीं लगता
इस शहर में क्या है जो अधूरा नहीं लगता

इस दौर का ये सच है मगर किस को बतायें
ग़ैरों[2] की तरह भी कोई अपना नहीं लगता

सीने से लिपटते ही पलट जाने की कोशिश
लहरों को किनारों पे भरोसा नहीं लगता

बस साथ निभाने का हुनर[3] साथ है वरना
काँटे का किसी फूल से रिश्ता नहीं लगता

छीने लिये जाता है उमीदों[4] की चमक भी
ये तो मिरे ख़्वाबों का उजाला नहीं लगता

हर साल नये पत्ते बदल देते हैं तेवर
बूढ़ा है मगर पेड़ पुराना नहीं लगता

ख़ुदगर्ज़ बना देती है शिद्दत की राह भी

प्यासे को कोई दूसरा प्यासा नहीं लगता

---

1. एकान्त
2. परायों
3. कला
4. आशाओं

27

कौन सी बात कहाँ कैसे कही जाती है
ये सलीक़ा[1] हो तो हर बात सुनी जाती है

जैसा चाहा था तुझे देख न पाये दुनिया
दिल में बस एक ये हसरत[2] ही रही जाती है

एक बिगड़ी हुई औलाद[3] भला क्या जाने
कैसे माँ बाप के होंठों से हँसी जाती है

क़र्ज़ का बोझ उठाये हुए चलने का अज़ाब[4]
जैसे सर पर कोई दीवार गिरी जाती है

अपनी पहचान मिटा देना हो जैसे सब कुछ
जो नदी है वो समन्दर से मिली जाती है

आज के बिखरे हुए बच्चों की क़िस्मत[5] में कहाँ
वो कहानी जो बुज़ुर्गों[6] से सुनी जाती है

पूछना है तो ग़ज़ल वालों से पूछो जा कर
कैसे हर बात सलीक़े से कही जाती है

1. ढंग
2. लालसा
3. सन्तान
4. दण्ड
5. भाग्य
6. बड़े-बूढ़े लोग

28

कही-सुनी पे बहुत एतबार[1] करने लगे
मिरे ही लोग मुझे संगसार[2] करने लगे

पुराने लोगों के दिल भी हैं ख़ुशबुओं की तरह
ज़रा किसी से मिले एतबार करने लगे

नये ज़माने से आँखें नहीं मिला पाये
तो लोग गुज़रे ज़माने से प्यार करने लगे

हमारी सादामिज़ाजी[3] की दाद[4] दे कि तुझे
बग़ौर परखे तिरा एतबार करने लगे

नज़र में चढ़ता नहीं फिर नज़र से गिरता है
जो हद से बढ़ के कोई इन्किसार[5] करने लगे

कोई इशारा दिलासा न कोई वादा मगर
जब आयी शाम तिरा इन्तिज़ार[6] करने लगे

तुझे ही ढूँढने निकले थे तेरे दीवाने
तो ये हुआ तिरी दुनिया से प्यार करने लगे

---

1. भरोसा, विश्वास

2. पत्थरों से मार कर दिया गया मृत्यु-दण्ड
3. सरल हृदयता
4. प्रशंसा
5. विनम्रता
6. प्रतीक्षा

29

कुछ ऐसा मोजज़ा[1] लफ़्ज़ों[2] के साथ हो जाये
जो मैं कहूँ वो ज़माने की बात हो जाये

हमारे पास कहाँ वक़्त जीतने का हुनर[3]
जो दिन को ढूँढने निकलें तो रात हो जाये

बुरी चली है हवा हमसफ़र[4] बदलने की
न जाने कौन कहाँ किस के साथ हो जाये

बस एक प्यार ही ऐसा बुरा खिलाड़ी है
जो चाल भी न चले और मात हो जाये

वो लाख जाने-सफ़र हो मगर उसे ये लगे
सफ़र में जैसे कोई यूँ ही साथ हो जाये

मैं तेरे काम का, दुनिया! कभी न हो पाऊँ
तो मुझ को लगता है मेरी निजात[5] हो जाये

क़ुसूरवार न ठहराना कल मिरे बादल
जो मेरी प्यास हवाओं के साथ हो जाये

---

1. चमत्कार

2. शब्दों
3. इल्म, कला
4. सहयात्री
5. छुटकारा, मुक्ति

30

तहरीर[1] से वरना मिरी क्या हो नहीं सकता
इक तू है जो लफ़्ज़ों में अदा[2] हो नहीं सकता

आँखों में ख़यालों में जो साँसों में बसा है
चाहे भी तो मुझसे वह जुदा हो नहीं सकता

जीना है तो ये जब्र[3] भी सहना ही पड़ेगा
क़तरा हूँ समन्दर से ख़फ़ा[4] हो नहीं सकता

गुमराह[5] किये होंगे कई फूल से जज़्बे[6]
ऐसे तो कोई राहनुमा[7] हो नहीं सकता

क़द[8] मेरा बढ़ाने का उसे काम मिला है
जो अपने ही पैरों पे खड़ा हो नहीं सकता

ऐ प्यार तिरे हिस्से में आया तिरी क़िस्मत
वह दर्द जो चेहरों से अदा हो नहीं सकता

---

1. रचना
2. वर्णन
3. अत्याचार
4. नाराज़

5. पथभ्रष्ट
6. भावनाएँ
7. मार्गदर्शक
8. व्यक्तित्व

31

मिरी नज़र के सलीक़े में क्या नहीं आता
बस इक तिरी ही तरफ़ देखना नहीं आता

अकेले चलना तो मेरा नसीब था कि मुझे
किसी के साथ सफ़र बाँटना नहीं आता

उधर तो जाते हैं रस्ते तमाम[1] होने को
इधर से हो के कोई रास्ता नहीं आता

जगाना आता है उसको कई तरीक़ों से
घरों पे दस्तकें देने ख़ुदा नहीं आता

यहाँ पे तुम ही नहीं आस पास और भी हैं
पर उस तरह से तुम्हें सोचना नहीं आता

पड़े रहो यूँ ही सहमे हुए दियों की तरह
अगर हवाओं के पर बाँधना नहीं आता

---

1. पूरा होना, समाप्त होना

32

अँधेरा ज़ेहन का सम्ते-सफ़र[1] जब खोने लगता है
किसी का ध्यान आता है उजाला होने लगता है

वह जितनी दूर हो उतना ही मेरा होने लगता है
मगर जब पास आता है तो मुझसे खोने लगता है

किसी ने रख दिये ममता भरे दो हाथ क्या सर पर
मिरे अन्दर कोई बच्चा बिलख कर[2] रोने लगता है

मुहब्बत चार दिन की और उदासी ज़िन्दगी भर की
यही सब देखता है और कबीरा रोने लगता है

समझते ही नहीं नादान कै[3] दिन की है मिलकीयत[4]
पराये खेतों पे अपनों में झगड़ा होने लगता है

ये दिल बच कर ज़माने भर से चलना चाहे है लेकिन
जब अपनी राह चलता है अकेला होने लगता है

---

1. यात्रा की दिशा
2. फूट-फूट कर
3. कितने
4. स्वामित्व

33

रात के टुकड़ों पे पलना छोड़ दे
'शम्म'[1] से कहना कि जलना छोड़ दे

मुश्किलें[2] तो हर सफ़र का हुस्न हैं
कैसे कोई राह चलना छोड़ दे

मैं तो ये हिम्मत दिखा पाया नहीं
तू ही मेरे साथ चलना छोड़ दे

लोग इस मंज़र के आदी हो चुके
क्या करे सूरज निकलना छोड़ दे

तुझसे उम्मीदे-वफ़ा[3] बेकार है
कैसे इक मौसम बदलना छोड़ दे

कुछ तो कर आदाबे-महफ़िल[4] का लिहाज़
यार ये पहलू बदलना छोड़ दे

---

1. दीपक
2. कठिनाइयाँ
3. वफ़ा की उम्मीद
4. महफ़िल के नियम

34

वो भी क्या दिन थे कि जब प्यार में डर लगता था
पास से उसके गुज़रना भी हुनर लगता था

आने वाले किसी लम्हे पे भरोसा न हुआ
जाने किस बात का ऐसा मुझे डर लगता था

अब तो जीने की भी आदत सी हुई जाती है
इक ज़माना था कि जीना भी हुनर[1] लगता था

ज़िन्दगी ख़ौफ़[2] किसी ने भी न खाया तुझ से
जिस को भी देखा उसे मौत से डर लगता था

अब तो हम हैं, दरो-दीवार[3] से बातें हैं वसीम
साथ बच्चे रहा करते थे तो घर लगता था

---

1. कला
2. डर
3. द्वार और दीवार

35

उसने मेरी राह न देखी और वह रिश्ता तोड़ लिया
जिस रिश्ते की ख़ातिर मुझसे दुनिया ने मुँह मोड़ लिया

बड़ी बड़ी ख़ुशियों के हाँ[1] नज़दीक से जा कर देखा तो
मैंने राह के चलते फिरते दुख से नाता जोड़ लिया

मैं कितने रंगों में ढलता कब तक ख़ुद से लड़ पाता
जीवन एक सफ़र था जिसने रोज़ नया इक मोड़ लिया

ऐसे शख़्स को मीर[2] बनाया जो बस ख़्वाब दिखाता था
बस्ती के लोगों ने अपना आप मुक़द्दर फोड़ लिया

मैं तो भोला भाला 'वसीम' और वो फ़नकार[3] सियासत का
उसके जब घटने की बारी आयी मुझको जोड़ लिया

---

1. यहाँ
2. अगुवा, नायक
3. कलाकार

36

वो मुझको क्या बताना चाहता है
जो दुनिया से छुपाना चाहता है

मुझे देखो कि मैं उसको ही चाहूँ
जिसे सारा ज़माना चाहता है

क़लम करना[1] कहाँ है उसका मंशा[2]
वो मेरा सर झुकाना चाहता है

शिकायत का धुआँ आँखों से दिल तक
तअल्लुक़[3] टूट जाना चाहता है

तक़ाज़ा[4] वक़्त का कुछ भी हो ये दिल
वही क़िस्सा पुराना चाहता है

---

1. काटना
2. मन्तव्य
3. सम्बन्ध
4. माँग, अपेक्षा

37

उसे तलाश हो अब क्या किसी बहाने की
हमीं को पड़ गयी आदत फ़रेब[1] खाने की

फिर आये लोग हुई कोशिशें मनाने की
मगर वो मैं कि न समझा हवा ज़माने की

तुम्हारी ज़िद है अगर फ़ासला बढ़ाने की
तो हम भी आख़िरी कोशिश में हैं निभाने की

तिरी नज़र को चुरा कर कोई कहाँ ले जाये
तिरी नज़र तो नज़र में है इक ज़माने की

तुम्हारे हाथों में हम कैसे बस्तियाँ सौंपें
तुम्हारे हाथों को आदत है घर जलाने की

---

1. धोखा

38

जहाँ दरिया कहीं अपने किनारे छोड़ देता है
कोई उठता है और तूफ़ान का रुख़ मोड़ देता है

मुझे बे-दस्तो-पा[1] करके भी ख़ौफ़ उसका नहीं जाता
कहीं भी हादिसा गुज़रे वह मुझसे जोड़ देता है

बिछड़ के तुझसे कुछ जाना अगर तो इस क़दर जाना
वो मिट्टी हूँ जिसे दरिया किनारे छोड़ देता है

मुहब्बत में ज़रा सी बेवफ़ाई तो ज़रूरी है
वही अच्छा भी लगता है जो वादे तोड़ देता है

1. हाथ-पाँव के बग़ैर

39

जब्र[1] का ज़हर कुछ भी हो पीता नहीं
मैं ज़माने की शर्तों पे जीता नहीं

देखे जाते नहीं मुझसे हारे हुए
इसलिए मैं कोई जंग जीता नहीं

अपनी सुबहों के सूरज उगाता हूँ ख़ुद
मैं चराग़ों की साँसों से जीता नहीं

उम्र भर ज़ाब्तों[2] की हदों में रहा
इसलिए मैं किसी का चहीता नहीं

---

1. ज़ोर-ज़बरदस्ती
2. नियमों

40

आँख में आँसू है रोने की तमन्ना दिल में है
एक क़दम मंज़िल से बाहर एक क़दम मंज़िल में है

ज़ब्त-ए-ग़म[1] से मिट गई आखिर जवानी की उमंग
पहले दिल मुश्किल में था अब ज़िन्दगी मुश्किल में है

आलम-ए-इश्क़-ओ-वफ़ा[2] से आ रही है यह ख़बर
राह में तारीकियाँ[3] है रोशनी मंज़िल में है

शम-ए-महफ़िल जल उठी और जल गया परवाना भी
देखना यह है उजाला किसके मुस्तक़बिल[4] में है

---

1. दुख या शोक का नियंत्रण
2. प्रेम-निबाह का संसार
3. अन्धकार
4. भविष्य

41

शब-ए-मैख़ाना भी जब तुझ पे गराँ[1] गुज़रेगी
ज़िन्दगी! तू ही बता दे कि कहाँ गुज़रेगी

तूने एक वज़्म को रोशन तो किया है लेकिन
उम्र ऐ शमअ तेरी बनके धुआँ गुज़रेगी

ज़िन्दगी तेरे लिए मैंने बहुत कुछ खोया
यह न समझा था कि वे नाम-ओ-निशां गुज़रेगी

आज पी लेने दे साक़ी मुझे जी लेने दे
कल मेरी रात ख़ुदा जाने कहाँ गुज़रेगी

उनसे कह दो मुझे ख़ामोश ही रहने दें 'वसीम'
लब पे आएगी तो हर बात गराँ गुज़रेगी

---

1. भारी

42

हयात उन्हें मिली जिनको ग़म-ए-हयात नहीं
वहाँ चराग़ जले हैं जहाँ पे रात नहीं

अंधेरे जिसका मुकद्दर न हों वह रात नहीं
उदास मैं न रहूं मेरे बस की बात नहीं

तुम्हारी बज़्म में उनके भी जाम ख़ाली हैं
जिन्हें यक़ीं है कि महरूम-ए-इल्तफ़ात[1] नहीं

तेरी निगाह मुझे ग़ैर क्यों नहीं लगती
जब इसके ज़हन[2] में माज़ी[3] की कोई बात नहीं

'वसीम' यूँ मेरे हालात पूछते हैं लोग
मेरे मिटाने में जैसे किसी का हाथ नहीं

---

1. कृपा से वंचित
2. मस्तिष्क
3. अतीत

43

लब पे दिल की बात भी आई नहीं
क्या यह तेरे ग़म की रुसवाई[1] नहीं

घेर लेते हैं ज़माने के ख़याल
मेरी तनहाई भी तनहाई नहीं

आँख से आँसू बहाकर क्या करूँ
मैं तेरे ग़म का तमाशाई नहीं

मुस्कुराना छोड़ दे ऐ ज़िन्दगी
यह अदा कलियों को रास आई नहीं

रास्तों में हो गया हर तजरबा
अब मैं मन्ज़िल का तमन्नाई[2] नहीं

इन दिनों मैं तो बहुत मजबूर था
क्या तुम्हें भी मेरी याद आई नहीं

मेरी ख़ामोशी को समझो तो 'वसीम'
इतनी शेरों में भी गहराई नहीं

ऐ 'वसीम' आँखें तुम्हारी सुर्ख़ हैं
रात भी लगता है नींद आई नहीं

1. बदनामी
2. इच्छुक

44

हाल[1] दुख देगा तो माज़ी[2] पे नज़र जायेगी
ज़िन्दगी हादिसा बन बन के गुज़र जायेगी

तुम किसी राह से आवाज़ न देना मुझको
ज़िन्दगी इतने सहारे पे ठहर जायेगी

तेरे चेहरे की उदासी पे है दुनिया की नज़र
मेरे हालात पे अब किसकी नज़र जायेगी

तुम जो ये-मशवरह-ए-तर्क-ए-वफ़ा देते हो
उम्र इक रात नहीं है जो गुज़र जायेगी

उनकी यादों का तसलसुल[3] जो कहीं टूट गया
ज़िन्दगी तू मेरी नज़रों से उतर जायेगी

इसी उम्मीद पे कब से चला जाता हूँ 'वसीम'
'उस' की जानिब[4] भी कोई राह गुज़र जायेगी

---

1. वर्तमान
2. अतीत
3. सिलसिला
4. ओर

45

तुम्हारी राह में हम ज़िन्दगी गुज़ार चले
क़रार ढूँढने आये थे बेक़रार चले

वहारखेज़[1] तबस्सुम था जिनकी फ़ितरत में
तेरे चमन से वह गुन्चे भी अश्कवार[2] चले

तेरे ख़याल में यूँ ज़िन्दगी गुज़रती है
कि जैसे गोद में लेकर कोई बहार चले

'वसीम' ऐसे ज़माने में इस मिज़ाज के साथ
यह कम नहीं है कि हम ज़िन्दगी गुज़ार चले

---

1. ऐसी मुस्कान जिसमें बसन्त आ जाये
2. रोते हुए

चुनिंदा अशआर

सलीक़ा ही नहीं, शायद उसे महसूस करने का
जो कहता है ख़ुदा है, तो नज़र आना ज़रूरी है

उसूलों पर जहाँ आँच आये, टकराना ज़रूरी है
जो ज़िन्दा हो, तो फिर ज़िन्दा नज़र आना ज़रूरी है

अजीब है कि मुझे रास्ता नहीं देता
मैं उस को राह से जब तक हटा नहीं देता

ये अपनी मर्ज़ी से अपनी जगह बनाते हैं
समन्दरों को कोई रास्ता नहीं देता

मैं इस उम्मीद पे डूबा कि तू बचा लेगा
अब इसके बाद मेरा इम्तिहान क्या लेगा

मैं बुझ गया, तो हमेशा को बुझ ही जाऊंगा
कोई चराग़ नहीं हूं कि फिर जला लेगा

बनेंगे ऊंचे मकानों में बैठकर नक़्शे
तो अपने हिस्से में मिट्टी का घर न आयेगा

‘वसीम’ अपने अंधेरों का ख़ुद इलाज करो
कोई चराग़ जलाने इधर न आयेगा

खुली छतों के दिये कब के बुझ गये होते
कोई तो है, जो हवाओं के पर कतरता है

ज़मीं की कैसी वक़ालत हो, फिर नहीं चलती
जब आसमां से कोई फ़ैसला उतरता है

सभी का धूप से बचने को सर नहीं होता
हर आदमी के मुक़द्दर में घर नहीं होता

क़लम उठाये मेरे हाथ थक गये, फिर भी

तुम्हारे घर की तरह मेरा घर नहीं होता

सहारा लेना ही पड़ता है मुझको दरिया का
मैं एक क़तरा हूं तनहा तो बह नहीं सकता

लगा के देख ले, जो भी हिसाब आता हो
मुझे घटा के वह गिनती में रह नहीं सकता

तू छोड़ रहा है, तो ख़ता इसमें तेरी क्या
हर शख़्स मेरा साथ निभा भी नहीं सकता

वैसे तो इक आँसू ही बहाकर मुझे ले जाये
ऐसे कोई तूफ़ान हिला भी नहीं सकता

क़तरा हूं, अपनी हद से गुज़रता नहीं
मैं समन्दर को बदनाम करता नहीं

जाने क्या हो गयी इसकी मासूमियत
अब ये बच्चा धमाकों से डरता नहीं

झूठ वाले कहीं-से-कहीं बढ़ गये
और मैं था कि सच बोलता रह गया

उसको कांधों पे ले जा रहे हैं 'वसीम'
और वह जीने का हक़ मांगता रह गया

जब अपनी सांस ही दरपरदा हम पे वार करे
तो फिर जहां में कोई किस पे एतबार करे

बहुत दिनों मैं ज़माने की ठोकरों में रहा
कहो ज़माने से अब मेरा इन्तिज़ार करे

आज पी लेने दे साक़ी मुझे जी लेने दे
कल मेरी रात ख़ुदा जाने कहाँ गुज़रेगी

उनसे कह दो मुझे ख़ामोश ही रहने दें ‘वसीम’
लब पे आएगी तो हर बात गराँ गुज़रेगी

आँखों आँखों रहे और कोई घर न हो
ख़्वाब जैसा किसी का मुक़द्दर न हो

रोशनी है तो किस काम की रोशनी
आँख के पास जब कोई मंज़र न हो

दूर से ही बस दरिया, दरिया लगता है
डूब के देखो कितना प्यासा लगता है

आज ये है कल और यहाँ होगा कोई
सोचो तो सब खेल तमाशा लगता है

आग हवा पानी से जो भी रिश्ता हो
मिट्टी के हैं मिट्टी में मिल जाना है

फल तो ख़ैर कहाँ उसके खा पाऊँगा
फिर भी पूरे शौक़ से पेड़ लगाना है

हम ये तो नहीं कहते कि हम तुझसे बड़े हैं
लेकिन ये बहुत है कि तिरे साथ खड़े हैं

ये गूँगों की महफ़िल है निकलना ही पड़ेगा
क्या इतनी ख़ता कम है कि हम बोल पड़े हैं

मैं क़तरा हो के भी तूफ़ाँ से जंग लेता हूँ
मुझे बचाना समन्दर की ज़िम्मेदारी है

दुआ करो कि सलामत रहे मिरी हिम्मत
ये इक चराग़ कई आँधियों पे भारी है

कुछ ऐसा मोजज़ा लफ़्ज़ों के साथ हो जाये
जो मैं कहूँ वो ज़माने की बात हो जाये

बुरी चली है हवा हमसफ़र बदलने की

न जाने कौन कहाँ किस के साथ हो जाये

जगाना आता है उसको कई तरीक़ों से
घरों पे दस्तकें देने ख़ुदा नहीं आता

पड़े रहो यूँ ही सहमे हुए दियों की तरह
अगर हवाओं के पर बाँधना नहीं आता

तुम किसी राह से आवाज़ न देना मुझको
ज़िन्दगी इतने सहारे पे ठहर जायेगी

इसी उम्मीद पे कब से चला जाता हूँ 'वसीम'
'उस' की जानिब भी कोई राह गुज़र जायेगी

तुझे पाने की कोशिश में कुछ इतना खो चुका हूँ मैं
कि तू मिल भी अगर जाये तो अब मिलने का ग़म होगा

मुहब्बत नापने का कोई पैमाना नहीं होता
कहीं तू बढ़ भी सकता है कहीं तू मुझसे कम होगा

कौन सी बात कहाँ कैसे कही जाती है
ये सलीक़ा हो तो हर बात सुनी जाती है

आज के बिखरे हुए बच्चों की क़िस्मत में कहाँ
वो कहानी जो बुज़ुर्गों से सुनी जाती है

पुराने लोगों के दिल भी हैं ख़ुशबुओं की तरह
ज़रा किसी से मिले एतबार करने लगे

नये ज़माने से आँखें नहीं मिला पाये
तो लोग गुज़रे ज़माने से प्यार करने लगे

जीना है तो ये जब्र भी सहना ही पड़ेगा
क़तरा हूँ समन्दर से ख़फा हो नहीं सकता

क़द मेरा बढ़ाने का उसे काम मिला है
जो अपने ही पैरों पे खड़ा हो नहीं सकता

किसी ने रख दिये ममता भरे दो हाथ क्या सर पर
मिरे अन्दर कोई बच्चा बिलख कर रोने लगता है

मुहब्बत चार दिन की और उदासी ज़िन्दगी भर की
यही सब देखता है और कबीरा रोने लगता है

मुश्किलें तो हर सफ़र का हुस्न हैं
कैसे कोई राह चलना छोड़ दे

मैं तो ये हिम्मत दिखा पाया नहीं
तू ही मेरे साथ चलना छोड़ दे

वो भी क्या दिन थे कि जब प्यार में डर लगता था

पास से उसके गुज़रना भी हुनर लगता था

अब तो जीने की भी आदत सी हुई जाती है
इक ज़माना था कि जीना भी हुनर लगता था

मुझे देखो कि मैं उसको ही चाहूँ
जिसे सारा ज़माना चाहता है

क़लम करना कहाँ है उसका मंशा
वो मेरा सर झुकाना चाहता है

फिर आये लोग हुई कोशिशें मनाने की
मगर वो मैं कि न समझा हवा ज़माने की

तुम्हारे हाथों में हम कैसे बस्तियाँ सौंपें
तुम्हारे हाथों को आदत है घर जलाने की

जहाँ दरिया कहीं अपने किनारे छोड़ देता है
कोई उठता है और तूफ़ान का रुख़ मोड़ देता है

मुहब्बत में ज़रा सी बेवफ़ाई तो ज़रूरी है
वही अच्छा भी लगता है जो वादे तोड़ देता है

देखे जाते नहीं मुझसे हारे हुए
इसलिए मैं कोई जंग जीता नहीं

अपनी सुबहों के सूरज उगाता हूँ ख़ुद
मैं चराग़ों की साँसों से जीता नहीं

वो समझता था, उसे पाकर ही मैं रह जाऊंगा
उसको मेरी प्यास की शिद्दत का अन्दाज़ा नहीं

कोई भी दस्तक करे, आहट हो या आवाज़ दे
मेरे हाथों में मेरा घर तो है, दरवाज़ा नहीं

तुम्हारी राह में मिट्टी के घर नहीं आते
इसीलिये तो तुम्हें हम नज़र नहीं आते

ख़ुशी की आँख में आँसू की भी जगह रखना
बुरे ज़माने कभी पूछकर नहीं आते

अपने साए को इतना समझाने दे
मुझ तक मेरे हिस्से की धूप आने दे

बाबा दुनिया जीत के मैं दिखला दूंगा
अपनी नज़र से दूर तो मुझको जाने दे

पहले तोलो, फिर कुछ बोलो
लफ़्ज़ कोई बेकार नहीं है

मैं सबसे झुककर मिलता हूं

मेरी कहीं भी हार नहीं है

मैं तो खोया रहूंगा तेरे प्यार में
तू ही कह देना, जब तू बदलने लगे

सोचने से कोई राह मिलती नहीं
चल दिये हैं, तो रस्ते निकलने लगे

इक जुदाई का वह लम्हा कि जो मरता ही नहीं
लोग कहते थे कि सब वक़्त गुज़र जाते हैं

हम तो बेनाम इरादों के मुसाफ़िर हैं 'वसीम'
कुछ पता हो, तो बतायें कि किधर जाते हैं

अजब दबाव है इन बाहरी हवाओं का
घरों का बोझ भी उठता नज़र नहीं आता

मैं इक सदा पे हमेशा को घर तो छोड़ आया
मगर पुकारने वाला नज़र नहीं आता

जाने कब शहर के रस्तों का बदल जाये मिज़ाज
इतना आसाँ तो नहीं लौट के घर आना भी

ऐसे रिश्ते का भरम रखना कोई खेल नहीं
तिरा होना भी नहीं और तिरा कहलाना भी

दुनिया मिरे ख़िलाफ़ खड़ी कैसे हो गयी
मेरी तो दुश्मनी भी नहीं थी किसी के साथ

किस काम की रही ये दिखावे की ज़िन्दगी
वादे किये किसी से गुज़ारी किसी के साथ

तुम तो अपने आप में ही गुम रहते हो
तुम से किसी का प्यार न समझा जायेगा

धुआँ भरा हो जिन आँखों में नफ़रत का
उनसे कोई ख़्वाब न देखा जायेगा

मैंने तो उसमें इक जहाँ देखा
मुझमें क्या बात उसे नज़र आयी

जायदादें कहाँ बटीं इनमें
जायदादों में बँट गये भाई

अपनी दरयाई पे इतरा न बहुत ऐ दरिया
एक क़तरा ही बहुत है तिरी रुसवाई को

चाहे जितना भी बिगड़ जाये ज़माने का चलन
झूठ से हारते देखा नहीं सच्चाई को

हमारा ये है हर कश्ती पे चढ़ कर बैठ जाते हैं

डुबो देगी कहाँ जा कर ये अन्दाज़ा नहीं होता

मिरे बच्चों! तुम्हें कितनी ही मैं आसानियाँ दे दूँ
बिना ठोकर लगे कोई सफ़र पूरा नहीं होता

हर शख़्स दौड़ता है यहाँ भीड़ की तरफ़
फिर यह भी चाहता है, उसे रास्ता मिले

इस दौर-ए-मुंसिफ़ी में ज़रुरी नहीं 'वसीम'
जिस शख़्स की ख़ता हो, उसी को सज़ा मिले

सब से जीती भी रहे, सब की चहीती भी रहे
ज़िन्दगी, ऐसे तुझे कौन गुज़रने देगा

दिल को समझाओ कि बेकार परेशाँ है 'वसीम'
अपनी मनमानी उसे कोई न करने देगा

ख़ुद चलो, तो चलो, आसरा कौन दे
भीड़ के दौर में रास्ता कौन दे

यह ज़माना अकेले मुसाफ़िर का है
इस ज़माने को फिर रहनुमा कौन दे

बिछड़ते वक़्त दिलासे, न खोखले वादे
वह पहली बार मुझे आज बेवफ़ा न लगा

'वसीम' अपने गरेबाँ में झांककर देखा
तो अपने चारों तरफ़ कोई भी बुरा न लगा

मेरा कहलाने का मतलब ये तो नहीं, तू मेरा हो
तेरा-मेरा रिश्ता, जैसे फूल का रिश्ता ख़ुश्बू से

शाहों ने भी शाही छोड़ के प्यार किया, तो प्यार मिला
दिल की ज़बानें जीत न पाया कोई भी ज़ोर-ए-बाज़ू से

अजीब लोग थे, क़ब्रों पे जान देते थे

सड़क की लाश का कोई भी दावेदार न था

‘वसीम’ धूप से बचने भी हम कहाँ आये
इक ऐसे पेड़ के नीचे, जो सायादार न था

चुनिंदा नज़्में

मैं तुम्हें दुख न दूँ तो किसको दूँ

मैं तुम्हें दुख न दूँ तो किसको दूँ
कौन इतना क़रीब है मेरे
इतना अपना तो मेरा कोई नहीं
जो मुझे मुझसे दूर ले जाये

जो मिरे ऐसे वक़्त काम आये
जब उमीदों का हर दिया बुझ जाये
जो मिरी ख़लवतों को पहचाने
सो अँधेरों में राह दिखलाये

और मैं पूरे एतमाद[1] के साथ
हाथ उसका कुछ ऐसे हाथ में लूँ
जैसे वो बेलिखा मुक़द्दर हो
जैसा बाहर हो वैसा अन्दर हो

उसके होंटों पे होंट यूँ रक्खूँ
जैसे उन फूल-पत्तियों का नशा
मेरे बैराग की अमानत हो
जिस्म का एक-एक हर्फ़[2] खुले

और ग़ज़ल की इशारियत[1] का सफ़र
ख़त्म हो कर सुहाग नज़्म बने
मैं जो ऐसे में बोलना चाहूँ
सी दे होंटो को अपने होंटो से

और उस कैफ़ियत में ले आये
जो असीरे-ज़बाँ नहीं होती
बस तसव्वुर[2] में रंग भरती है
जुगनुओं की तरह चमकती है

और अँधेरे में रक़्स[3] करती है
मैं तुम्हें दुख न दूँ तो किसको दूँ
तुम मिरी चाह की सदाक़त हो
तुम मिरा ख़्वाब हो हक़ीक़त हो

सब तो वक़्ती[4] सुखों के साथी हैं
चाहतें इनकी बेग़रज़ कब हैं
ये मदारी हैं जिनका सारा काम
बस मिरे नाचने से चलता है

उनकी छोड़ो यह माँगने वाले
तुमसे हर बाज़ी हार जायेंगे
इनसे कोई उमीद क्या रक्खूँ
और तुम्हें दुख न दूँ तो किसको दूँ

तुम मिरा एतबार ही तो हो
तुम मिरा इख़्तियार ही तो हो
तुमसे बढ़ कर भला कहाँ कोई
जो ये बारे-गिराँ[1] उठा पाये

कोई बे सम्ती-ए-सफ़र[2] को यूँ
जागी आँखें सजाने वाला है
कौन इक जागते मुसाफ़िर को
अपनी नींदे सुलाने वाला है

फ़ोन जिन उँगलियों से होता है
उनकी महरूमियाँ समझता हूँ

लाओ उन उँगलियों को चूमता हूँ
जो मुझे ढूँढने निकलती हैं

और मायूस भी नहीं होती
उनकी मसरूफ़ियत समझता हूँ
कभी बालों से खेलती हैं तो ये
कभी आँखों पे रक्खी जाती हैं

कभी दिल की तरफ़ सरकती हैं
धड़कनों के शुमार करने को
रेंगती हैं तमाम जिस्म पे यूँ
जैसे मैं चोर हूँ ये पहरेदार

थक गयी हैं ये उँगलियाँ तो लाओ
मैं उन्हें फिर से ताज़ा दम कर दूँ
तुम लिखो और लिखती ही जाओ
चूम कर मैं उन्हें क़लम कर दूँ

मुझको एहसास है मैं जानता हूँ
कितना ईसार कर रही हो तुम
अज़्मतें तुम पे नाज़ करती हैं
और मेरी सलाहियत की हदें
तुमसे नज़रें मिलाते डरती हैं

---

1. विश्वास
2. अक्षर
1. संकेतात्मक, लाक्षणिकता
2. कल्पना
3. नृत्य
4. क्षणिक
1. भारी बोझ
2. यात्रा की दिशाहीनता

मेरा साथ न दो

अपने ही बारे में सोचो
सोच को इम्कानात[1] न दो

मेरी राहें बहुत अलग हैं
जाओ मेरा साथ न दो

तुम फूलों के पीछे पागल
मैं ख़ुशबू का दीवाना
मुझको ख़ाली जाम बहुत हैं
तुमको चाहिए मैख़ाना

जो मेरे हाथों में आ कर
काँपे ऐसा हाथ न दो
मेरी राहें बहुत अलग हैं
जाओ मेरा साथ न दो

तुमको शौक़, ज़माना जाने
मेरी दुनिया तुम ही तुम
तुमको रग़बत[2] दुनिया भर से
मेरा हवाला तुम ही तुम

जो मेरे एहसास से खेलें
मुझको वो दिन-रात न दो

मेरी राहें बहुत अलग हैं
जाओ मेरा साथ न दो

तुम चढ़ते सूरज के पुजारी
मैं रातों का हमराही
तुम पक्की बालों से झूलो
मैं पगडंडी धूल भरी

मुझको ही मुझसे जो छुड़ा दें
ऐसे एहसासात न दो
मेरी राहें बहुत अलग हैं
जाओ मेरा साथ न दो

तुम सोन-चाँदी की छन-छन
मैं मिट्टी का सोंधापन
तुम इक शहर का टेढ़ा रस्ता
मैं गाँव का फैलापन

तुम आवाज़ों की इक दुनिया
सन्नाटे का साथ न दो
मेरी राहें बहुत अलग हैं
जाओ मेरा साथ न दो

---

1. संभावनाएँ
2. दिलचस्पी

खिलौना

देर से एक नासमझ बच्चा
इक खिलौने के टूट जाने पर
इस तरह से उदास बैठा है
जैसे मैयत[1] क़रीब रक्खी हो
और मरने के बाद हर-हर बात
मरने वाले की याद आती हो
जाने क्या-क्या ज़रा तवक़्कुफ़[2] से
सोच लेता है और रोता है
लेकिन इतनी ख़बर कहाँ उसको
ज़िन्दगी के अजीब हाथों में
ये भी मिट्टी का इक खिलौना है

---

1. शव
2. देर

मेरी ज़मीं

मेरी ज़मीं[1] प्यारी ज़मीं
तू आस्माँ से है बड़ी
जिस की बलन्दी की कशिश[2]
अच्छी तो है सच्ची नहीं
लेकिन ये तेरा वहम[3] है
मैं तुझ से कट कर भी कभी
सम्ते-सफ़र[4] छू पाऊँगा
तू जब भी चाहे थाम ले
ये पाँव जिन से हैं सफ़र
के फ़ासलों में जुअर्तें[5]
सब कुछ तो तेरे दम से है
मेरी ज़मीं प्यारी ज़मीं
तू तो मिरी रफ़्तार[6] है
क़दमों की पहरेदार है
तू ही मिरा इज़हार[7] है
तू ही मिरा ग़मख़्वार[8] है
मेरी ज़मीं प्यारी ज़मीं

---

1. ज़मीन, धरती
2. आकर्षण
3. भ्रम

4. यात्रा
5. साहस
6. गति
7. प्रकट, रुप, अभिव्यक्ति
8. हमदर्द, सहानुभूति करने वाला

शहीदों का पैग़ाम

मुहब्बत के चराग़ों को धुआँ होने नहीं देना
ज़मी के कंकरों को आसमाँ होने नहीं देना
गुलाबों की महक को बेज़ुबाँ[1] होने नहीं देना

महाज़े-जंग[2] से रह-रह के ये आवाज़ आती है
शहीदों के लहू को रायगाँ[3] होने नहीं देना

जो रातों से मिली हो उस सहर[4] से फ़ासला रखना
खुले दिल की मुलाक़ातों[5] से शर[6] का फ़ासला रखना
जो आँखों को लड़ा दे उस नज़र से फ़ासला रखना

महाज़े-जंग से रह-रह के ये आवाज़ आती है
शहीदों के लहू को रायगाँ होने नहीं देना

बस इक इन्साफ़ की शमएँ जलें घर-घर उजाला हो
हमारी नेकनामी का जहाँ[7] में बोलबाला हो
ख़रीदे वो न हमको जिसने ख़ुद को बेच डाला हो

महाज़े-जंग से रह-रह के ये आवाज़ आती है
शहीदों के लहू को रायगाँ होने नहीं देना

समन्दर की हदें तय हों कोई प्यासा न रह जाये
अँधेरों के इशारों पर दिया जलता न रह जाये

हमारे जान देने का बस इक क़िस्सा न रह जाये

महाज़े-जंग से रह-रह के ये आवाज़ आती है
शहीदों के लहू को रायगाँ होने नहीं देना

---

1. मूक, चुप
2. युद्धक्षेत्र, लड़ाई का मैदान
3. व्यर्थ
4. भोर
5. भेंट
6. बुराई
7. दुनिया

अदना[1] सा बासी

कल भी मेरी प्यास पे दरिया हँसते थे
आज भी मेरे दर्द का दर्मां[2] कोई नहीं
मैं इस धरती का अदना सा बासी हूँ
सच पूछो तो मुझ सा परेशाँ कोई नहीं
कैसे-कैसे ख़्वाब बुने थे आँखों ने
आज भी उन ख़्वाबों सा अज़ाँ[3] कोई नहीं
कल भी मेरे जख़्म भुनाये जाते थे
आज भी मेरे हाथ मे दामाँ[4] कोई नहीं
कल मेरा नीलाम किया था ग़ैरों ने
आज तो मेरे अपने बेचे देते हैं
सच पूछो तो मेरी ख़ता[5] बस इतनी है
मैं इस धरती का अदना सा बासी हूँ

---

1. तुच्छ
2. इलाज
3. सस्ता
4. आँचल, दामन
5. गुनाह, दोष

सियासत[1] के नाम

हमने लफ़्ज़ों को एतबार[2] दिया
तूमने जीते जी उनको मार दिया
हमने दिल जोड़ने का काम किया
तुमने ज़ेहनों[3] को इन्तशार[4] दिया
हमने बस प्यार बाँटना चाहा
तुमने नफ़रत का कारोबार किया
काश, तुमको कोई बता देता
तुमने ज़ेहनों को जो ग़ुबार[5] दिया
एक कुर्सी ज़रूर जीत गये
तुमने हिन्दोस्तान हार दिया

---

1. राजनीति
2. विश्वास
3. मन
4. बेचैनी
5. धूल

31 अक्टूबर 1984 का ग़मगीन शाम के नाम

वो एक फूल की पत्ती गुलाब की ख़ुशबू
हज़ार काँटों में रह कर, जो मुस्कुराती थी
जो आँधियों के मुक़ाबिल[1] दिये जलाती थी
ज़मीं को फूल बनाने का एहतमाम[2] रहा
तमाम उमर जिसे ज़िन्दगी से काम रहा
वो एक फूल की पत्ती गुलाब की ख़ुशबू
बिखर के रह गयी इस एतबार के हाथों
जिसे बनाने में सदियों का हौसला दरकार
जिसे गँवाने में लम्हों की गुमरही[3] काफ़ी
वो एक फूल की पत्ती गुलाब की ख़ुशबू
कुछ ऐसी बिखरी कि आँसू पे इख़्तियार नहीं
कुछ ऐसी बिखरी कि आँखों पे एतबार नही
कुछ ऐसी बिखरी कि माहौल[4] सोगवार लगे
ये सारा बाग़ ही जैसे गुनाहगार[5] लगे

---

1. मुक़ाबले में सामना
2. इन्तज़ाम, प्रबन्ध
3. पथभ्रष्टता
4. वातावरण
5. दोषी

शहर मेरा

शहर मेरा उदास गंगा सा
कोई भी आये और अपने पाप
खो के जाता है धो के जाता है
आग का खेल खेलने वाले
ये नहीं जानते कि पानी का
आग से बैर है हमेशा का
आग कितनी ही ख़ौफ़नाक सही
उसकी लपटों की उम्र थोड़ी है
और गंगा के साफ़ पानी को
आज बहना है कल भी बहना है
जाने किस-किस का दर्द सहना है
शहर मेरा उदास गंगा सा

ख़्वाब नहीं देखा है

मैंने मुद्दत से कोई ख़्वाब नहीं देखा है
रात खिलने का गुलाबों से महक आने का
ओस की बूँदों में सूरज के समा जाने का
चाँद सी मिट्टी के ज़र्रों[1] से सदा[2] आने का
शहर से दूर किसी गाँव में रह जाने का
खेत खलिहानों में बागों में कहीं गाने का
सुबह घर छोड़ने का, देर से घर आने का
बहते झरनों की खनकती हुई आवाज़ों का
चहचहाती हुई चिड़ियों से लदी शाख़ों[3] का
नरगिसी[4] आँखों में हँसती हुई नादानी का
मुस्कुराते हुए चेहरे की ग़ज़लख़्वानी[5] का
तेरा हो जाने तिरे प्यार में खो जाने का
तेरा कहलाने का तेरा ही नज़र आने का
मैंने मुद्दत से कोई ख़्वाब नहीं देखा है
हाथ रख दे मिरी आँखों पे नींद आ जाये

---

1. कणों
2. आवाज़
3. डालियों
4. नरगिस की तरह
5. ग़ज़ल पढ़ना

एक नज़्म

दीवाली की रात आयी है तुम दीप जलाये बैठी हो
मासूम उमंगों को अपने सीने से लगाये बैठी हो
तस्वीर को मेरी फूलों की ख़ुशबू में बसाये बैठी हो
आँखों के नशीले डोरों पर काजल को बिठाये बैठी हो
मैं दूर कहीं तुमसे बैठा इक दीप की जानिब[1] तकता हूँ
इक बज़्म[2] सजाये रक्खी है इक दर्द जगाये रखता हूँ
ख़ामोशी मेरी साथी है और देखने वाला कोई नहीं
ऐ काश! कहीं से आ जाते जीने का बहाना कोई नहीं

---

1. ओर, तरफ़
2. सभा, गोष्ठी

ख़ुदकुशी[1]

ख़ामोशी और शब का सन्नाटा
एक मैं एक तेज़रौ[2] दरिया
घोंसलों में छुपे हुए पंछी
दिल लरज़ता हुआ परिन्दों का
दूर साधू की एक कुटिया में
जल रहा है दिया मगर चुप है
किस क़दर बेहिसी[3] का जीना है
नौहा[4] जारी है नौहागर[5] चुप है
कौन सा दर्द है जिसे दिल में
ले के तन्हाइयों में आता हूँ
ये मक़ामात सोचते होंगे
रोज़ आता हूँ लौट जाता हूँ
आज इक साल हो गया ख़ालिद
जब इसी गोमती के पानी को
तुमने फूलों की सेज समझा था
और ठुकरा दिया जवानी को
फ़िक्रे-रोज़ी[6] मआले-ख़ुद्दारी[7]
एक कुनबे की ज़िन्दगी का सवाल
छोटे भाई की छूटती तालीम[8]
छोटी बहनों की शादियों का ख़याल
प्यार करती रही मगर शमसा
तुमसे अहदे-वफ़ा[1] निभा न सकी

मुफ़लिसी ऐसा एक शोला थी
जिसको कोई हवा बुझा न सकी
जानलेवा थे सारे ग़म ख़ालिद
मैंने माना कि तुम परेशां थे
लेकिन ऐ दोस्त! कैसे भूल गये
तुम बहरहाल एक इन्साँ थे
तुमने अच्छा नहीं किया साथी
ख़ुदकुशी को इलाजे-ग़म समझा
मौत की बरतरी[2] को मान लिया
और इक ज़िन्दगी को कम समझा
शमआ जलती है आँधियों में भी
दर्द बन जाते तुम दिलों के लिए
इस मुसलसल जिहाद[3] में ख़ालिद
तुमको जीना था दूसरों के लिए
ज़िन्दगी की उदासियों में भी
सोचने के लिए बहुत कुछ था
सोचने के लिए बहुत कुछ था
लेकिन अब हो तो कुछ नहीं सकता

---

1. आत्महत्या
2. तीव्रगामी
3. निर्लज्जता
4. रुदन
5. रुदन करने वाला
6. आजीविका की चिन्ता
7. स्वाभिमान का परिणाम
8. शिक्षा, पढाई
1. वचन, प्रतिक्षा
2. श्रेष्ठता
3. संघर्ष

मेरी तस्वीर

वो दिन कि तुमने मुझे पहली बार देखा था
मुझे कहाँ मिरी तस्वीर को जो कॉर्निस पर
मिरी ख़मोश क़िताबों के साथ रक्खी थी
यह कौन हैं मिरी बहनों से तुमने पूछा था

उन्हें तो लगता है जैसे कहीं पे देखा था

जवाब उनसे तुम्हें क्या मिला ये तुम जानो
मगर ये कहती थीं तुम भी कि उनकी जुअर्त पर
हया के बोझ से नज़रें न उठ सकीं फिर भी
ज़बाँ से कुछ न कहा तुमने इस शरारत पर

अदा से रख के झुकी आँख पर हथेली को
शुब्हे में डाल दिया था हर इक सहेली को

वो दिन कि सारे ज़माने की आँख से बच कर
मिरे ख़यालों में रहने की आरज़ू की थी
नज़र के सामने तस्वीर रख के रातों के
मिरी ख़मोश निगाहों से गुतगू की थी

हर एक शेर को ख़लवत में गुनगुनाया था
ख़मोशियों में तरन्नुम मिरा चुराया था

किसी बहाने से आयीं तुम और आती रहीं

वफ़ा के साज़ रूहों का रक्स होता रहा
तकल्लुफ़ात उठे और तुम अजनबी न रहीं
हसीन ज़ुल्फ़ के साये में प्यार सोता रहा

क़रीब रह के मुहब्बत की मंज़िलें समझीं
बहुत सी रातें बड़ी एहतियात से गुज़रीं

मिरा ख़याल क़िताबों से दूर रहने लगा
तुम्हारी यादें मिरा काफ़ी वक़्त लेने लगीं
सहेलियाँ तुम्हें मग़रूर कह के छोड़ गयीं
तुम अपना वक़्त मिरी शायरी को देने लगीं

तुम्हारी आँखों में छुप कर सुरूर रहने लगा

मुझे वफ़ाओं पे अपनी ग़ुरूर रहने लगा
लबों का पाक तबस्सुम लबों की हद में रहा
दिलों की बातों निगाहों तक आ के लौट गयीं
तुम एक रोज़ अनोखी सी एहतियात के साथ
मिरी खुली हुई बाँहों तक आ के लौट गयीं

ये एक ऐसी अदा थी ज़बाँ से कुछ न कहा
बस एहतिराम से बाँहों को अपनी चूम लिया

मगर चराग़ हमेशा कहीं नहीं जलते
ये ज़िन्दगी है ज़माने के साथ चलती है
ख़ुशी की उम्र का, लम्हे हिसाब करते हैं
हसीन हो ते मुहब्बत नज़र बदलती है

ये हादिसात कहाँ तक ख़लाओं में पलते
कहाँ तक अपनी मुहब्बत के मशग़ले चलते

तुम्हारी पाक मुहब्बत पे बदगुमाँ नज़रें
उठी हुई थीं मगर फिर भी आ रही थीं तुम
तुम्हारे आने में वो बेतकल्लुफ़ी न रही
अब एक रस्म थी जिसको निभा रही थीं तुम

बनी हुई थीं मुहब्बत का इम्तिहाँ नज़रें
किस एहतियात से उठती थी बेज़बाँ नज़रें

तुम इम्तिहान के हर दौर से गुज़रती रहीं
अदा से शमए - मुहब्बत मगर जलाये हुए
कुछ आरज़ूएँ मुहब्बत की मौत मरती रहीं
मिरे ख़याल को हर साँस में छुपाये हुए

ख़मोशियों में सदाओं का रंग भरती रहीं
तग़य्युरात की फ़ितरत से जंग करती रहीं

तुम्हारे दिल में ख़मोशी की आग जाग उठी
मिरे ख़याल में उभरे नये नये ख़ाके
हमारे माथे की शिकनें उभर के डूब गयीं
हमीं ने मिल के बग़ावत के ख़्वाब भी देखे

मगर ज़माने के आगे हमारी इक न चली
जो उठ चुकी थी वो आँधी दियों से रुक न सकी

तुम्हारे पास शराफ़त की पासदारी थी
जिसे ज़माना कोई अहमियत नहीं देता
तुम्हारे पास हया का हसीन ज़ेवर था
जिसे यहाँ पे कोई मुफ़्त भी नहीं लेता

मिरे ख़ुदा ने दिया आदमी ने छीन लिया
तुम्हें रिवाज़ों की शोख़ी ने मुझसे छीन लिया

तुम्हारे घर में अमारत का एहतिमाम न था
कि जिससे जिस्म की बोली लगायी जाती है
फिर इन ज़मीरफ़रोशों का तजरिबा भी न था
जो सूद लेते हैं औलाद की जवानी से

ख़िज़ाँ से देते हैं जश्ने बहार का बदला
वसूल करते हैं मासूम प्यार से क़र्ज़ा

ज़माना अपने तरीक़ों पे नाज़ करता है
मैं दूर रहने पे मजबूर हो गया तुमसे
रिवाजो-रस्मो-मुक़द्दर की पासबानी में
क़रीब आ के बहुत दूर हो गया तुमसे

रिवायतों का गिराया हुआ सँभल न सका
क़दम उठाये मगर अपनी राह चल न सका

ये मुख्तसर सी कहानी चलो तमाम हुई
नये सफ़र को नया दिल बना लिया तुमने
इन एतबारफ़रोशों की बस्तियों से दूर
चराग़े-शामे-ग़रीबाँ जला लिया तुमने

सहर की नूर मिज़ाजी सुपुर्दे-शाम हुई
ये मुख़्तसर सी कहानी चलो तमाम हुई

मगर ये रूप बदलना तुम्हें न रास आया
तुम्हारे दिल को नये मशग़ले न जीत सके
चराग़ तेल की क़िल्लत से टिमटिमा उट्ठा
तबीब[5] आये इलाजों के बाद लौट गये

रगों में फैल गयी पर्दादारे-ग़म न हुई
कुछ ऐसी आग थी दिल की दवा से कम न हुई

मरज तुम्हारा दवाओं से मात खा न सका
अजीब ज़ख़्म थे दिल के कि मुन्दमिल न हुए
अजल क़रीब थी फिर भी नफ़स की बन्दिश में
वो दर्द थे कि हवाओं में मुन्तक़िल न हुए

तुम्हारे पास से गुज़रा क़रीब जा न सका
ये इत्तिफ़ाक़ तुम्हें देखने भी आ न सका

ज़माना अपने किये पर बहुत पशेमाँ था
मगर उदास बग़ावत के आगे इक न चली
अब एहतिमामे-चराग़ाँ से बज़्म क्या सजती
चिता में आग लगाते रहे चिता न जली

हर एहतिमाम के बावस्फ़ ज़ख़्म भर न सका
मिरी उदास निगाही को ख़त्म कर न सका

इधर शबाब मिरा शायरी में ढलने लगा
उधर तबीबों के हाथों से नब्ज़ छूट गयी
इधर मैं शेरों में दिल का लहू उगलने लगा
उधर तुम्हारी जवानी की शाम आ पहुँची

जमी हुई थीं निगाहें फ़राज़े-साहिल पर
अब अपने पाँव सफ़र में थे आँख मंज़िल पर

ग़मों की आँख मिरी बेकसी पे भर आयी
मिरे लबों का तबस्सुम ने साथ छोड़ दिया
तुम्हारे बाद मिरी ज़ीस्त में ख़मोशी थी
कि जिस को मेरे ही शेरों ने मिल के तोड़ दिया

न जाने कैसे ये साँसों में डूब कर आयी
तुम्हारी याद हर इक शेर में उतर आयी

तुम आज मेरी इयादत को क्यों चली आयीं
तुम्हें तो ख़ुद भी अब आराम की ज़रूरत हैं
ये उतरा-उतरा सा चेहरा ये मुज़्महिल से नुकुश
तग़ाय्युरात से मुझको बड़ी शिकायत है

अजब तरह से रुसुमे-हयात अपनायी
ये तुम हो या है तुम्हारी वफ़ा की परछाई

तुम आ गयी हो तो कुछ याद आ रहा है मुझे
मिरी निगाह के आगे क़िताब माज़ी है
मगर ये सोच के पाये ख़याल रुक से गये
कि मेरा हाल ही मेरा जवाबे-माज़ी है

मैं मुतमइन हूँ कि इक ग़म उठा रहा है मुझे

बड़ी अदा से ज़माना मिटा रहा है मुझे
ये देख लो वही कमरा है जिसमें पहली बार
मिरे शबाब की तस्वीर तुमने देखी थी
तुम्हारे सामने कॉर्निस है और वही तस्वीर
वहीं पे रक्खी है उस दिन जहाँ पे रक्खी थी

मगर फ़्रेम के शीशे पे जम गया है ग़ुबार
बता रही हैं फ़ज़ाएँ बहुत उड़ा है ग़ुबार
ग़ुबार जिसने तुम्हें दूर कर दिया मुझसे

निगाह भर के तुम्हें देख भी नहीं सकता
तुम्हें भी मेरे ख़दो-खाल क्या नज़र आयें
न जाने कब तक उठेगा ये ख़ाक का पर्दा

वो ख़ाक जिसने तुम्हें दूर कर दिया मुझसे
ग़ुबार जिसने मिरा ख़्वाब ले लिया मुझसे

जवाँ नज़रें

वो एक रेलवे क्वार्टर की एक खिड़की से
लगी हुई कोई नादान नौजवाँ लड़की
खड़ी है और मुझे इस तरह देखे जाती है
कि जैसे मेरी निगाहों में अपनी नौउम्री
डुबो चुके तो किसी से नज़र मिलायेगी
किस एतमाद[1] से अपनी नज़र की कश्ती[2] को
मिरी निगाहो के तूफ़ाँ में डाल रक्खा है
कि मेरे दिल की तहों को उतर के छू आये
ये कमसिनी के गुलिस्ताँ[3] के गुलबदन[4] शोला
बहुत हसीं तो नहीं है मगर जवानी ने
गुदाज़[5] जिस्म को चिनगारियों में गूँधा है
नज़र को गर्मी-ए-जज़्बात ने तपाया है
मैं एक रेल के डब्बे में जिसका क्वार्टर से
बरायेनाम सा कुछ फ़ासला रहा होगा
ये बैठा सोच रहा हूँ कि रास्ता चलता
मैं अजनबी हूँ जिसे कोई हमसफ़र भी मिरा
न जानता है न अपनाइयत की नज़रों से
ग़रीब दिल में उतरने का क़स्द[6] रखता है
मगर ये फ़ासला इस इक जवाँ नज़र में नहीं
जो बारे-शर्म उठाते हुए झिझकती है
जो सिर्फ़ मेरे लिए बार-बार उठती है
ये लम्हा भर के लिए हो कि मुद्दतों के लिए
जवान नज़रों का आपस में इक तअल्लुक़ है

जिसे भुला के ये फ़ितरत से लड़ नहीं सकतीं
कहीं मिलें ये मगर अजनबी नहीं होतीं

---

1. विश्वास
2. नाव
3. फुलवारी
4. फूल जैसे कोमल और मृदुल अंगों वाली
5. मांसल
6. इच्छा, कामना

दीवाने दो

सिर्फ़ एहसासे-जुदाई से बहलते रहना
लड़खड़ाते हुए क़दमों से सँभलते रहना
बेकसी और ये उतरा हुआ चेहरा शब का
मैं अकेला हूँ मिरे साथ ही चलते रहना

और कुछ देर चराग़ों, अभी जलते रहना

अभी उम्मीदों की नज़रों में चमक बाक़ी है
अभी इन बेले की कलियों में महक बाक़ी है
उनके आने की तवक़्क़ो[1] तो नहीं है फिर भी
सोचने के लिए गुन्जाइश-ए-शक बाक़ी है

सीख लूँ तुमसे ही मुमकिन है सँभलते रहना
और कुछ देर चराग़ों, अभी जलते रहना

सोचता हूँ कई उम्मीदे-सहर में होंगे
कितने ही मेरी तरह और सफ़र में होंगे
अपनी मंज़िल की तमन्नाएँ लिये हसरत से
कितने अफ़साने अभी राहगुज़र में होंगे

तुम हवाओं के इरादों को बदलते रहना
और कुछ देर चराग़ों, अभी जलते रहना

ढल चुकी रात हुआ बन्द लबे-ज़ख़्में-जिगर
रह गयी दिल में अँधेरों के, तमन्ना-ए-सहर
कोई आया न इधर रात के सन्नाटों में
मुन्तज़िर ही रही मासूम दुओं की नज़र

अब किस उम्मीद पे कह दूँ कि बहलते रहना
और कुछ देर चराग़ो, अभी जलते रहना

थक गया दर्द ठहरने लगे साँसों के क़दम
ग़म के एहसास से घुटने लगा उम्मीद का दम
नाउमीदी ने उमीदों को कहाँ छोड़ दिया
खुल न जाये मिरी ख़ामोश मुहब्बत का भरम

उम्र भर मेरी तरह आग में जलते रहना
रास आया न तुम्हें भी ये पिघलते रहना

तुम भी बुझ जाओ मिरे दिल को भी बुझ जाने दो
आख़िरी बार मिरी आँखों को भर आने दो
आज की रात मुहब्बत पे गिराँ गुज़रेगी
ख़त्म हो जायेंगे इक साथ ही दीवाने दो

---

1. अपेक्षा

आँसूफ़रोश[1]

मैं दिल के ज़ख़्मों का एक ताजिर[2] मैं एक आँसूफ़रोश शायर
मैं ज़िन्दगी के उदास चेहरे की झुर्रियाँ बेचने चला हूँ
नज़र की तिश्नालबी[3] की मैंने मिज़ाजे-फ़न[4] में समो दिया है

सियाह[5] रातों से जो मिली हैं वो तल्ख़ियाँ बेचने चला हूँ

गुनाहगार आँख के इशारे पलक से ढलके हुए सितारे
थमी हुई तीरगी[6] के साये मिटे-मिटे रोशनी के ख़ाके
लुटे हुए कारवाँ का माज़ी शिकस्त खाये हुए इरादे

मैं मुर्दा इन्सानियत के दामन की धज्जियाँ बेचने चला हूँ

ख़ुलूस की ज़िन्दगी के लाले वफ़ा का ख़ूँ जान की तबाही
झुकी निगाहों की कजअदाई[7] जवान होंटो की बेवफ़ाई
नये ज़माने की तंज़ख़ूई[8] हसीन माज़ी की बेसबाती

हज़ार होंटो की बात करती ख़मोशियाँ बेचने चला हूँ

कोई ख़रीदो कि बात करती ख़मोशियाँ बेचने चला हूँ
कोई ख़रीदो कि आज ख़ुद्दारियों[9] का माथा झुका हुआ है
कोई ख़रीदो कि आज फ़नकार ज़िन्दा रहना भी चाहता है
ख़फ़ीफ़[10] नज़रों से अपने फ़न को हर एक चेहरे को देखता है

ये लम्हा तारीख़ ही का दे दो कि उसका माज़ी से सिलसिला है
हर ऐसे लम्हे को इक अमानत बना के तारीख़[11] ने रक्खा है
मगर अमानत बना के रखने का सिलसिला कब तलक रहेगा
रगों से फ़नकार की कहाँ तक ये क़तरा-क़तरा लहू[12] बहेगा

---

1. आँसू बेचनेवाला
2. व्यापारी
3. प्यास
4. कला
5. काली
6. अंधेरे
7. रूखापन
8. व्यंग्य करने की आदत
9. आत्माभिमान
10. हलकी निगाह, विहंगम दृष्टि
11. इतिहास
12. रक्त

ऐ ख़्वाबे-सफ़र

ऐ ख़्वाबे-सफ़र[1] ताबीरे-सफ़र[2]
ऐ सम्ते-सफ़र तक़दीरे-सफ़र[3]
ले सारे गिले बेजान हुए
तू अपनी शिकायत पर नादिम[4]
मैं अपने लिखे पर शर्मिन्दा
अब आ कि बुनें एक ख़्वाब नया
जो आँखों-आँखों सफ़र करे
जो जज़्बों को बेजिगर करे
जो प्यार की ख़ुशबू से जागे
जो क़ुर्ब[5] के ज़ानू पर सोये
मैं तुझसे मुहब्बत की दुनिया
माँगूँ तो मुझे मिल ही जाये
तू चाँद को छूना चाहे तो
मैं चाँद ज़मीं पर ले आऊँ
मैं प्यासे होंट दिखाऊँ तो
सात समन्दर जश्न करे
तू मुझमें समाना चाहे तो
शक़[6] हो जाऊँ धरती की तरह
मैं क़लम उठाऊँ लिखने को
तू लफ़्ज़ बने शहकार[1] बने
तू प्यार के नग़मे गाये तो
मैं गीत बनूँ मल्हार बनूँ

तू जुगनू का अरमान करे
मैं मुट्ठी खोल के दिन दे दूँ
मैं एक किरन की बात करूँ,
तू सूरज डाल दे क़दमों में
तू क्या है कैसे बतलाऊँ
मैं लफ़्ज़ कहाँ से लाऊँगा
तू कौन है किसको समझाऊँ
मैं ख़ुद से बिछड़ना चाहूँगा
ऐ रूहे-सफ़र ऐ जाने-सफ़र
ऐ हुस्ने-सफ़र इम्काने-सफ़र
तू ऐसे समन्दर रिश्ते को
क्यों लहर सा कोई नाम ही दे
इस झूठनुमा सच्चाई को
क्या तय है कोई इल्ज़ाम ही दे

---

1. यात्रा का स्वप्न
2. यात्रा का फल
3. यात्रा का भाग्य
4. शर्मिन्दा
5. नज़दीकी
6. दो फाड़
1. अत्युत्तम कृति

क़लम बरदाश्ता[1]

तू कि पर्दे में भी, नुमायाँ भी
तू कि मुश्किल भी, और आसाँ भी
तू कि ख़ामोशियों की दुनिया भी
तू कि इज़हार का सलीक़ा भी
तेरी आँखों की रोशनी का सफ़र
मेरी परछाइयों के सीने पर
एक वादे पे एतबार की बात
देर तक अपने इन्तज़ार की बात
तुझको ऐ काश यह पता होता
तेरा उस रोज़ लापता होना
कैसे-कैसे सवाल करता था
जितना जीता था उतना मरता था
फिर कई दिन अजीब हाल रहा
सामने इक बड़ा सवाल रहा
लिखना चाहा तो लिख नहीं पाया
शिकवा करना मुझे नहीं आया
आज तेरी तवील नज़्म[2] के साथ
ज़ेहन में आ रही है ऐसी बात
जिसको लफ़्ज़ों से छूते डरता हूँ
डूबता हूँ न पार उतरता हूँ
मैं तो बस झूठ हूँ बनावट हूँ
अपनी ही बदगुमान आहट हूँ
मैं दिखावों की राह का राही

मेरी आदत सभी की दिलदारी
मेरे जज़्बे सदाकतों[1] से परे
मेरे रिश्ते महज़[2] दिखावे के
मैं हुआ आसमान का तारा
और तू एक मिट्टी का ज़र्रा
इज़्ज़तें मेरी बरतरी मेरी
और सारी अज़ीयतें[3] तेरी
सबको बहलाना मेरी फ़ितरत[4] है
यानी ये प्यार मेरी आदत है
अपने झूठे चलन से ज़िन्दा हूँ
और तिरे सच्चेपन से डरता हूँ
लफ़्ज़ सब झूठे और बेमानी
यानी मेरा वुजूद सैलानी
मुझको इस तरह सोचने वाले
तू तअल्लुक़ का दर्द क्या जाने
झूठ उस पर कहाँ करेगा यक़ीं
सच बताने का जिस पे वक़्त नहीं
वो दिखावे का दर्द क्या सहता
अपने हाथों में जो नहीं रहता
फिर भला मुझसे बदगुमानी क्यों
इतनी बेरब्त-सी कहानी क्यों
मेरी सच्चाइयों पे शक करना
है गुनाहों से जोड़ना रिश्ता
मेरे बारे में ऐसा क्यों सोचा
कि मैं अपनी नज़र से गिरने लगा
मेरे बारे में अपनी सोच बदल
एक लम्बे सफ़र पे साथ निकल
धूप को चाँदनी बनाने तक
जब्र सहना है मुस्कराने तक
ज़िन्दगी पहले ही उदास-सी है

इक किरन वो भी बदहवास सी है
रोशनी को असीर[1] करने तक
साथ दे आफ़ताब[2] उभरने तक

---

1. आशुलेख
2. कविता
1. सच्चाइयों
2. मात्र
3. यातनाएँ
4. आदत
1. क़ैद
2. सूरज

गीत

छोटी-छोटी ख़ुशियाँ अपनी

छोटी-छोटी ख़ुशियाँ अपनी छोटे-छोटे ग़म
हम क्या जानें सत्ताधर्मी तेरे दीन-धरम
पेट की आग बुझाने भर को फिरते मारे-मारे
घर का सपना देख-देख के नैन हुए बंजारे

खेतों के सीने से उपजे अपना हर मौसम
हम क्या जानें सत्ताधर्मी तेरे दीन-धरम

खेत पड़ा है गिरवी जैसे ग़ैर के घर, घरवाली
अपने बाग़ की सेवा से वंचित है बाग़ का माली

क़र्ज़ा कैसे उतरे बाँटे कौन किसी का ग़म
हम क्या जानें सत्ताधर्मी तेरे दीन-धरम

छोरी भई सयानी लागी चिन्ता बड़ी महान
बियाही जाने से गोहने तक पल-पल सदी समान

शहनाई बजते ही जैसे फूट पड़े सरगम
हम क्या जानें सत्ताधर्मी तेरे दीन-धरम

ग़मी किसी के घर हो सगरे गाँव जले न चूल्हा
बिन आशीर्वचन बूढ़ों के, बने न कोई दूल्हा

कन्या इक घर से ही जाये घर-घर आँखें नम

हम क्या जानें सत्ताधर्मी तेरे दीन-धरम

जवानों का अभिनन्दन

धरती के अनमोल सितारों! तुम एक दौर का दर्पण हो,

धरती के अनमोल सितारों-

ख़ून बहाकर धरती माँ की लाज बचाने वालों!
कल की रक्षा करने वालों! आज बचाने वालों।
ऐ इतिहास के राजदुलारों! तुम एक दौर का दर्पण हो,

दुल्हनों के सिंदूर, तुम्हारे माथे तिलक लगायें
बहनें रक्षाबन्धन वाला वादा, याद दिलायें!
माँ ख़ुद बढ़कर कहे सिघारो! तुम एक दौर का दर्पण हो,

धरती के अनमोल सितारों-

नींदों की बलि देकर तुमने कितने ख़्वाब बचाये,
खेत का जादू फ़स्ल की ख़ुशबू कोई लूट न पाये।
सीमाओं के पहरेदारों! तुम एक दौर का दर्पण हो,

धरती के अनमोल सितारों-

घोर अँधेरों में इक अनबूझ दीप जलाने वालों!
एक मज़लूम की डूबती कश्ती पार लगाने वालों!
ऐ मर्यादा के पतवारों! तुम एक दौर का दर्पण हो,

धरती के अनमोल सितारों-

सजन, मैं भूल गयी ये बात

तू अम्बर की आँख का तारा मेरे छोटे हाथ

सजन, में भूल गयी ये बात

तुझको सारे मन से चाहा, चाहा सारे तन से
अपने पूर पन से चाहा और अधूरेपन से
पानी की इक बूँद कहाँ और कहाँ भरी बरसात

सजन, में भूल गयी ये बात

जनम-जनम माँगूँगी तुझको तू मुझको ठुकराना
मैं माटी में मिल जाऊँगी तू माटी हो जाना
लहर के आगे क्या इक छोटे तिनके की औक़ात

सजन, में भूल गयी ये बात

तेरी ओर ही देखा मैंने अपनी ओर न देखा
जब-जब बढ़ना चाहा पाँव से लिपटी लक्ष्मण रेखा
मैं अपने भी साथ नहीं थी तेरे दुनिया साथ

सजन, में भूल गयी ये बात

डूबी जाऊँ

तेरी एक नज़र ही मुझको धूप से कर गयी छाँव

सजन, ये बात किसे बतलाऊँ

तन की तपती रेत पे जैसे फुहार गिरे शबनम की
कैसी लज्जाहीन छुअन पापी तेरे मौसम की
बदरा-बदरा सेज सजाऊँ धूप-धूप शर्माऊँ

सजन, ये बात किसे बतलाऊँ

कल तक जिस दरपन में मैं थी और मिरे वीराने
आज उसी दरपन में तू ही तू है तू क्या जाने
मेरे अन्दर चोर छुपा है जाने कब चुर जाऊँ

सजन, ये बात किसे बतलाऊँ

रोज़ के देखे भाले मंज़र आज कुछ और कहे हैं
दुनिया भर की नदियाँ जैसे मेरे साथ बहे हैं
कैसा किनारा हाथ में आया है कि डूबी जाऊँ

सजन, ये बात किसे बतलाऊँ

बन्द हुआ हर द्वार

जीवन के इस मोड़ पे जैसे छूट गया संसार

कि जैसे रूठ गया संसार

कविता बाज़ारों में लायी यादों का त्योहार
तन्हाई से रिश्ता माँगा सन्नाटों से प्यार
सुर सागर में छोड़ के मुझको टूट गया हर तार

कि जैसे रूठ गया संसार

सपनों के नीलाम पे रोयी आँखों की ख़ुद्दारी
सागर-सागर डूब के उभरी प्यास की इक चिंगारी
साये को मुहताज हुई है जिस्म की ये दीवार

कि जैसे रूठ गया संसार

चेहरे की व्यवहारिकता से दरपन टूटा जाये
कल से आज का आज से कल का दामन छूटा जाये
गली-गली सन्नाटा जागे बन्द हुआ हर द्वार

कि जैसे रूठ गया संसार

अभी अभ्यास नहीं

दूर भी रहना आ जायेगा मन को अभी अभ्यास नहीं
जीवन भर प्यासा रहना है पल दो पल की प्यास नहीं
दूर भी रहना आ जायेगा मन को अभी अभ्यास नहीं

शाम ढले यादों की खिड़की का हर पट खुल जाये
पायल गूँजे चूड़ी बाजे कंगन कान में गाये

साथ मिरा ठुकरानेवाले कब तू मेरे पास नहीं
दूर भी रहना आ जायेगा मन को अभी अभ्यास नहीं

नींदों के अधरों पर अब भी तेरी ही बातें हैं
आहट-आहट चौंक पड़े हैं क्या दुश्मन रातें हैं

तू मेरे विश्वास को लूटे मुझको अभी विश्वास नहीं
दूर भी रहना आ जायेगा मन को अभी अभ्यास नहीं

दिल का क्या था इक दरपन जो ठेस लगी और टूटा
देह के मेले में क्या आये जन्मों का नाता टूटा

टूट-बिखर जाने के आगे दरपन का इतिहास नहीं

दूर भी रहना आ जायेगा मन को अभी अभ्यास नहीं
दरपन-दरपन
अपना चेहरा खो कर पगला दरपन-दरपन ढूँढ रहा है
जिस्म की दीवारों में रह कर मन का आँगन ढूँढ रहा है
खँडहरों में रातों को इक आवाज़ अकेली जागे
गूँगे पत्थर बात न पूछें हीर पुकारें राँझे
सारे बन्धन तोड़ने वाला प्यार का बन्धन ढूँढ रहा है

मन का आँगन ढूँढ रहा है

फूल की ख़ुशबू को छूने की फ़िक्र में उम्र गुज़ारी
जीते पत्ते हाथ में ले कर जीवन बाज़ी हारी
हार को जीत बना ले अपनी ऐसा साधन ढूँढ रहा है

मन का आँगन ढूँढ रहा है

रिश्तों के व्यापार में पड़ कर जीवन दाँव लगाये
पत्थर खाये पत्थर पूजे पत्थर ही अपनाये
काँटों के अधिकार में रह कर फूल का दामन ढूँढ रहा है

मन का आँगन ढूँढ रहा है

आशाओं की होली

बिरहा की अग्नि में जल गयी आशाओं की होली
आज मिरा सन्नाटा मुझसे खेले आँख-मिचोली
यादों की कस्तूरी लिये मैं शहरों-शहरों जाऊँ
ख़्वाबों की जंज़ीरें ग़म की हिरनी को पहनाऊँ
तपती धूप में कब तक मन की कच्ची आग बुझाऊँ

बाज़ारों में कौन लगाये अनजाने की बोली
आज मिरा सन्नाटा मुझसे खेले आँख-मिचोली

नील गगन पर तारे जैसे जख़्मों की बारात
चाँद अकेला जैसे तन्हा तन्हाई की बात
रात उजाली हो कर भी है अँधियारों के साथ

आस का क्या है जिसने पुकारा साथ उसी के हो ली
आज मिरा सन्नाटा मुझसे खेले आँख-मिचोली

गहरे दरिया में खो कर भी मोती हाथ न आये
दरिया की लहरों ने देखो क्या-क्या रंग दिखाये
तूफ़ाँ-तूफ़ाँ ज़ख़्म उठाये मौज-मौज टकराये

और हुआ यह साहिल-साहिल अपनी नाव डुबो ली
आज मिरा सन्नाटा मुझसे खेले आँख-मिचोली

इश्क़ है आग लगाने वाला है जीवन एक अलाव

कब तक घुलने दूँ साँसों में तन्हाई के घाव
कब से नैना खोज रहे हैं कहीं नज़र तो आओ

ऐसे देश बसा हूँ जिसमें कोई न समझे बोली
आज मिरा सन्नाटा मुझसे खेले आँख-मिचोली

ख़ुशबू आँगन-आँगन जाये

बाँसुरिया वो गीत कि जिससे बस्ती का सूनापन जाये
नग़मों का वो फूल कि जिस की ख़ुशबू आँगन-आँगन जाये

बाँसुरिया वो गीत कि जिससे बस्ती का सूनापन जाये

चेहरों के इस शहर में जैसे सब जाने-अनजाने
नफ़रत की वो धूल अटी है कौन किसे पहचाने
धर्म के नाम पे बहने वाले ख़ून का यह सस्तापन जाये

बाँसुरिया वो गीत कि जिससे बस्ती का सूनापन जाये

महलों-महलों दिन निकले हैं कुटियों-कुटियों रात
अन्देशों के शहर खड़ी है सपनों की बारात
बूढ़े उपदेशों की गलियों अब क्या बाग़ी यौवन जाये

बाँसुरिया वो गीत कि जिससे बस्ती का सूनापन जाये

पूजा के फूलों पर भी लालच की ओस पड़ी है
लज्जित-लज्जित प्रेम की देवी आस के द्वार खड़ी है
इन्सानी उपहार के सर से स्वार्थ का यह पागलपन जाये

बाँसुरिया वो गीत कि जिससे बस्ती का सूनापन जाये

तोड़ गया सावन

धरती को अम्बर से जोड़ गया सावन
जोड़ा कुछ ऐसे कि तोड़ गया सावन
बूँदो में उतरीं समन्दर सी बातें
बाहर के होटों पे अन्दर की बातें

भीगे हुओं को निचोड़ गया सावन
जोड़ा कुछ ऐसा कि तोड़ गया सावन

मन में छिड़ीं ऐसी बेनाम जंगें
अँगड़ाई भी ले न पायें उमंगें

होंटों को प्यासों से जोड़ गया सावन
जोड़ा कुछ ऐसा कि तोड़ गया सावन

धरती को बाँहों में भरने की ख़्वाहिश
पैंगो से आकाश छूने की कोशिश

झूलों को हिलता ही छोड़ गया सावन
जोड़ा कुछ ऐसे कि तोड़ गया सावन

गूँगे पहाड़ों से बचता-बचाता
बेजान खँडहरों पे आँसू बहाता

नाज़ुक कलियाँ मरोड़ गया सावन

जोड़ा कुछ ऐसे कि तोड़ गया सावन

पकड़े न मन का चोर

अमुवा की डाली पे कोयलिया कूके मोर मचाये शोर

सजन कोई पकड़े न मन का चोर

साँसों की गर्मी से काया पिघले कोई न जाने भेद
मेरी इक अँगड़ाई से बच कर गुज़रें चारों वेद
मैं इक आग की चढ़ती नदिया तू ही मेरा ज़ोर

सजन कोई पकड़े न मन का चोर

जल की मछरी जल जग जाने, जल बाहर अज्ञान
अन्दर-बाहर शोर न हो तो जंगल भी सुनसान
तू जो थामे हाथ तो बैरी घटे हवा का ज़ोर

सजन कोई पकड़े न मन का चोर

भला मैं मानूँ किसकी बात

आँख कहे कि दिन निकला है दिल ये कहे है रात

भला मैं मानूँ किसकी बात

चौराहों की भीड़ में खोयी चेहरों की पहचान
शौक़ से अब इन्सान के रूप में आ जाये भगवान
कुछ होता है कुछ दिखता है कुछ लगता है हाथ

भला मैं मानूँ किसकी बात

मन्दिर चुप है मस्जिद चुप है नफ़रत बोल रही है
और सियासत ज़हर कहाँ तक पहुँचा तोल रही है
कुछ के लिए ये आग का मौसम कुछ के लिए बरसात

भला मैं मानूँ किसकी बात

जिस्म को आग लगाने पर मजबूर है पेट की आग
फूलों ने अंगारे पहने घर-घर पहुँची आग
कोई उसे कहता परिवर्तन कोई सियासी[1] घात

भला मैं मानूँ किसकी बात

औरत के सम्मान से बढ़ कर औरत की मजबूरी
मर्द को पूरा करने ही में औरत हुई अधूरी

जनम-जनम उसकी हो जाये जिसको थमा दो हाथ

भला मैं मानूँ किसकी बात

---

1. राजनीतिक

मेरा प्यार न हो तो

धरती कैसे अनाज उगाये, अम्बर क्या पानी बरसाये
मेरा प्यार न हो तो साजन दूर तलक सूखा पड़ जाये
हरा भरा सब मेरे दम से बाक़ी सब कुछ धूल
मेरे कारण फूल में ख़ुशबू वर्ना फूल भी शूल

मेरे प्यार को छू जाये तो मिट्टी भी सोना हो जाये
मेरा प्यार न हो तो साजन दूर तलक सूखा पड़ जाये

हँसते-गाते मेले-ठेले रंग भरे त्योहार
पिया मिलन की आस न हो तो सब के सब बेकार

प्यार जगे तो घूँघट का अभिमान धरा रक्खा रह जाये
मेरा प्यार न हो तो साजन दूर तलक सूखा पड़ जाये

प्यार नगर तक आने वाले सारे रस्ते चोर
फिर भी उन रस्तों पर आने वालों का इक शोर

मर्यादाएँ आस बँधाएँ हर बन्धन रस्ता दिखलाये
मेरा प्यार न हो तो साजन दूर तलक सूखा पड़ जाये

धुआँ-धुआँ शहरों में टूटे वन का पागल शोर
आँखों की सीमा से आगे बढ़े न मन का चोर

मेरे प्यार की उँगली थामे कलयुग भी सतयुग हो जाये

मेरा प्यार न हो तो साजन दूर तलक सूखा पड़ जाये

पछतावे

सपने जैसा यौवन उड़ती तितली जैसा प्यार
कहीं मिल जाये फिर इक बार
फूलों में बस कर रह जाऊँ ख़ुशबू के पर कतरूँ
पायल की आवाज़ को अपने पाँव से बाँध के रक्खूँ

पतझर पर अब कभी न खुलने दूँगी अपने द्वार
कहीं मिल जाये फिर इक बार

सावन को चुनरी कर लूँ साँसों में रख लूँ बूँदें
बाँहों के घेरे में ले लूँ चाँद की प्यासी किरनें

उम्र से अब के छीन ही लूँगी ढलने का अधिकार
कहीं मिल जाये फिर इक बार

कैसे-कैसे भावुक पल अभिमान की भेंट चढ़ाये
साजन मैं ख़ुद सोयी और तुझे तारे गिनवाये

अब न कभी जीतूँगी मैंने मानी ऐसी हार
कहीं मिल जाये फिर इक बार

लहरों जैसा प्यार

झीलों जैसा मनवा मेरा लहरों जैसा प्यार
कि मेरा लहरों जैसा प्यार
सन्नाटे की चादर ओढ़े सोये सगरा गाँव
पाँव की पायल खोल के अपने पिया से मिलने जाऊँ

सीना मेरा घायल कर दे साँसों की तलवार
कि मेरा लहरों जैसा प्यार

कौन सा भेद बताऊँ सखियों कौन सा भेद छुपाऊँ
गाँव की चौपाल से गुज़रूँ साँसें रोकती जाऊँ

मोरी जीत भी ऐसी लागे जैसे मोरी हार
कि मेरा लहरों जैसा प्यार

दरपन की चौखट पर पहरों खड़ी-खड़ी शरमाऊँ
पिछली साँझ का वादा तोड़ के मन ही मन पछताऊँ

इस संसार में मेरे अपने स्वप्न का इक संसार
कि मेरा लहरों जैसा प्यार

पक्की बाली की तरह मेरा जिस्म झकोले खाये
अनजानी बाँसुरियाँ की लय पर मनवा लहराये

यौवन के मँझधार से काँपे मर्यादा पतवार

कि मेरा लहरों जैसा प्यार

सखियों से ही मिलना चाहूँ उनसे ही कतराऊँ
अपने मन की गहराई में ख़ुद ही डूबती जाऊँ

इक दूजे को घूर रहे हैं नैया और पतवार
सजनवा लहरों जैसा प्यार

न आये शहर में ऐसी रात

फूलों जैसे रिश्ते छूटे ख़ुशबू जैसे हाथ

न आये शहर में ऐसी रात

माँ की आँख का तारा खोया बाप का एक सहारा
घर से निकला ही क्यूँ था जो घर को लौट न पाया
जीवन ठहरा हाँफता पंछी, मौत के लम्बे हाथ

न आये शहर में ऐसी रात

सन्नाटे का सीना चीर गयी इक अन्धी गोली
बहरे हुए बरसों के रिश्ते गूँगी प्यार की बोली
किस की जीत का जश्न मनाये आँसू की बरसात

न आये शहर में ऐसी रात

ख़ूब हुई बस्ती में वीरानों में आँख मिचोली
ख़ूब खिली और ख़ूब ही खेली सबने ख़ून की होली
कोई तो हो जो इतना कहे क्या आया किसके हाथ

न आये शहर में ऐसी रात

मेरे गाँव की मिट्टी

मेरे गाँव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली
तेरा भोलापान दुनिया की सबसे बड़ी पहेली
तेरे आँगन में उतरे हैं सच्चे-सच्चे मौसम
तू अपने सीधे-सीधे रंगों से भारी-भरकम
तेरे सामने क्या लगते हैं बेला जूही चमेली

तेरी महक बड़ी अलबेली

भोर भये, फसलें अँगड़ाई लें जागें खलिहान
खेतों में सूरज उतरे तो किरनें लगें किसान
तू सदियों से एक ही जैसी फिर भी नयी नवेली

तेरी महक बड़ी अलबेली

सावन के झूलों में झूलें जिस्मों के अंगारे
पेंगे भरती उम्रें चढ़ती नदियाँ बहते धारे
कोई है उन में लाज दुलारी कोई बड़ी खुल खेली

तेरी महक बड़ी अलबेली

हरियाली को देख-देख के अपना आपा आँके
घूँघट में रह कर भी गोरी सात समन्दर झाँके
आँख उठा कर देख ले जिस को उसका अल्ला बेली

तेरी महक बड़ी अलबेली